॥ श्रीः ब्र.प्रा.ग्र.11 ॥

संस्कृत भाषा के आधुनिक जैन ग्रंथकार

देवर्धि जैन

।। श्रीः ।।

CHAUKHAMBHA PRAKASHAN
Post Box No. 1150
K. 37 / 116, Gopal Mandir Lane Golghar (Near Maidagin)
Varanasi-221001 (India)
Telephone : 2335929, 6452172
E-mail : c_prakashan@yahoo.co.in

चौखम्भा प्रकाशन
पोस्ट बाक्स नं. ११५०
के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (समीप मैदागिन)
वाराणसी - २२१००१ (भारत)
टेलीफोन : २३३५९२९, ६४५२१७२
E-mail : c_prakashan@yahoo.co.in

© चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
इस ग्रन्थ का मूल-पाठ तथा टीका परिशिष्ट एवं हिन्दी भाषा का सर्वाधिकार प्रकाशन-प्रकाशक के अधीन है। इसका किसी भी भाषा में अनुवाद एवं किसी भी माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना पुनर्मुद्रण व प्रकाशन अवैधानिक होगा।

© CHAUKHAMBHA PRAKASHAN, VARANASI
All rights reserved (Including Text) by the publishers. No part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, Photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner

Chaukhambha Prakashan Registration No. A-77539

॥ श्रीः ॥

ब्रजरत्नदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला
९

संस्कृत भाषा के आधुनिक जैन ग्रंथकार

लेखक
देवर्धि जैन

चौखम्भा प्रकाशन
पोस्ट बाक्स नं. ११५०
के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१

प्रकाशक :

चौखम्भा प्रकाशन

पोस्ट बाक्स नं. ११५०

के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (समीप मैदागिन)

वाराणसी - २२१००१ (भारत)

टेलीफोन : २३३५९२९, ६४५२१७२

E-mail : c_prakashan@yahoo.co.in

© चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

इस ग्रन्थ का परिष्कृत तथा परिवर्धित मूल-पाठ एवं टीका, परिशिष्ट आदि के सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है।

संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०६९

मूल्य : १५५.००

Publisher

CHAUKHAMBHA PRAKASHAN

Post Box No. 1150

K. 37 / 116, Gopal Mandir Lane, Golghar (Near Maidagin)

Varanasi-221001 (India)

Telephone : 2335929, 6452172

E-mail : c_prakashan@yahoo.co.in

Edition : First, 2012

Price : Rs. 155.00

Chaukhambha Prakashan Registration No. A-77539

मुद्रक : चारू प्रिंटर्स, वाराणसी

प्रस्तावना

धन्यास्ते सुरभारतीषु रचनैर्यैरर्जितं सद्यशः

धन्यास्ते भगवद्वचोऽनुसरणैः शास्त्राणि ग्रथ्नन्ति ये।

येषां शक्तिसु शारदा विलसति श्री द्वादशांगीं श्रिता

तेषां नाम नमामि पुण्यचरितं प्रत्येकमत्यादरात् ।।

मनुष्य चिंतन मन में करता है, चिंतन की अभिव्यक्ति के लिए वाणी का उपयोग करता है। साधारण वार्तालाप से ऊपर उठकर मनुष्य, धर्म-विद्या-कला के विषय पर वाणी प्रयोग करता है तब उसे असाधारण भाषा की आवश्यकता महसूस होने लगती है। वाणी प्रयोग भी जब वार्तालाप से एक कदम आगे बढ़कर लेखन की भूमिका तक पहुँचता है तब साधारण भाषा अपने आप छूट जाती है।

संस्कृत भाषा भारतवर्ष की एक असाधारण भाषा है। विश्व की पाँच मूल भाषाओं के नाम इस प्रकार हैं- १. आर्य (Aryan), २. द्राविड़ (Dravidian) ३. मुण्डा (Munda), ४. मन्-ख्मेर (Mon-khmer), (५) तिब्बत चीना (Tibeto-Chinese)। भारत में आज मराठी, बंगला, ओड़िया, बिहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और काश्मीरी भाषाओं का प्रयोग होता है- जो मूलतः आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। भारत में और भारत के बाहर प्रयुज्यमान अन्य भाषाओं का संबंध, द्राविड़ आदि मूल भाषाओं से है। पाईअसद्दमहण्णवो ग्रंथ की प्रस्तावना में श्री हरगोविंददास शेठ ने लिखा है कि 'अंग्रेजी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी आदि आर्य भाषाओं का जो वंशगत ऐक्य उपलब्ध होता है, इन अनार्य भाषाओं के साथ वह संबंध नहीं देखा जाता है।'

संस्कृत भाषा आर्य भाषाओं में सबसे प्राचीन मानी जाती है। वैदिक परंपरा में संस्कृत, जैन परंपरा में प्राकृत और बौद्ध परंपरा में पालि, यद्यपि सबसे महत्त्वपूर्ण भाषा मानी जाती है लेकिन भारतीय आस्तिक चिंतनधारा की दृष्टि से अवलोकन करें तो संस्कृत भाषा में भारतीय ग्रंथकारों ने सबसे अधिक ग्रंथ लिखे हैं। वार्तालाप की भाषा संस्कृत हो सकती है या नहीं यह चर्चा चलती रहेगी। लेखन की भाषा के रूप में संस्कृत भाषा सर्वाधिक विद्वत्प्रिय रही है।

आज भारत के विविध राज्यों की अपनी-अपनी भाषा है, संस्कृत भाषा कोई एक राज्य की नहीं परंतु समूचे राष्ट्र की भाषा है। अंग्रेजी को विश्वभाषा और हिंदी को राष्ट्रभाषा कहा गया है, क्योंकि आदान-प्रदान के लिए वो अपनी-अपनी जगह पर अधिक प्रचलित है। केवल जब ग्रंथसर्जन की बात करें तो संस्कृत का गौरव अपूर्व है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के विषय में संस्कृत साहित्य का जो अवदान है वह अपने आप में अनूठा है। ईसा पूर्व २००० से लेकर आजतक संस्कृत भाषा में महामनीषियों के द्वारा नवसर्जन होता रहा है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथकारों के विषय में अनेक इतिहास ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

पिछले सौ-डेढ़सौ साल में संस्कृत नवसर्जन की धारा में बहुत सारे नए नाम आए हैं। सभी का सामूहिक परिचय एक साथ उपलब्ध हो ऐसी एक सर्वांगीण किताब बनानी चाहिए।

हमनें इस निबंध में आधुनिक जैन ग्रंथकारों का वर्गीकरण करके आधुनिक जैन ग्रंथकारों के योगदान का प्राथमिक परिचय देने का प्रयास किया है। आधुनिक जैन ग्रंथकारों की संख्या १५५ तक पहुँची है।

छोटे-छोटे लेख, स्तोत्र, अष्टक आदि का समावेश हमने नहीं किया है फिर भी ग्रंथ संख्या ७००के आगे निकल चुकी है। हमें लगता है कि संस्कृत भाषा के अन्य जैन ग्रंथकार भी होंगे जो हमारी जानकारी में नहीं आए हैं। हम उन सभी अज्ञात ग्रंथकारों से क्षमायाचना कर लेते हैं।

जैन ग्रंथों की प्रधान भाषा प्राकृत है। आधुनिक प्राकृत ग्रंथों का भी हमने इस निबंध में समावेश कर लिया है। संस्कृत भाषा कठिन है, प्राकृत भाषा सरल है फिर भी आधुनिक जैन ग्रंथों की प्रमुख भाषा संस्कृत भाषा दिख रही है क्योंकि ७०१ ग्रंथों में से प्राकृत ग्रंथों की संख्या है केवल ३२ और बाकी के ६६९ ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं।

वैदिक धर्म, बौद्धधर्म और अन्य धर्मों के भारतीय एवं विदेशी ग्रंथकारों ने संस्कृत भाषा में जो भी नवसर्जन किया है उसका विशाल सूचीकरण जब होगा तब जैनधर्म के आधुनिक ग्रंथकारों की प्रस्तुत सूची अवश्य उपयोगी सिद्ध होगी। आने वाले समय में हम इन्हीं ग्रंथों का विस्तृत परिचय तैयार करेंगे।

जैनधर्म की चार प्रमुख धाराएँ वर्तमान में प्रसिद्ध हैं- श्वेतांबर मूर्तिपूजक, दिगंबर, स्थानकवासी और तेरापंथी। चारों परंपराओं के आधुनिक संस्कृत साहित्य का सूचीकरण एक साथ पर करना- यह भी शायद जैनसंघ में नया प्रयोग है।

श्री पार्श्वनाथ विद्यापीठ, बनारस के पुस्तकालय मे अनेक-अनेक पुस्तकों के अवलोकन और अभ्यास करने के बाद हम यह निबंध लिख पाए हैं।

लेखन कार्य में डॉ. सुदर्शनलाल जैन, डॉ.श्रीप्रकाश पाण्डेय, डॉ. अशोक कुमार सिंह और विशेषत: श्री ओमप्रकाश सिंह का हार्दिक सहयोग हमें मिला है। डॉ. भागचंदजी जैन (नागपुर), डॉ. कमलेश कुमार जैन, डॉ. सुधा जैन का सहयोग श्लाघ्य रहा है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा के आचार्यश्री शीलचन्द्रसूरिजी, आचार्यश्री मुनिचन्द्रसूरिजी का मार्गदर्शन अविस्मरणीय है। चौखम्भा प्रकाशन के श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्त का आदरभाव हम नहीं भूल सकते हैं।

११.१२.२०११ **देवर्धि**

अनुक्रम

	पृष्ठ संख्या
१. भूमिका	७–९
२. आगम संबंधी साहित्य	१०–१४
३. प्रकरण साहित्य : टीकाग्रंथ	१५–१७
४. प्रकरण साहित्य : नूतन रचना	१८–२१
५. कर्म साहित्य	२२–२३
६. व्याकरण साहित्य	२४–२६
७. कोश साहित्य	२७–२९
८. दार्शनिक साहित्य	३०–३३
९. अलंकार साहित्य	३४
१०. छन्दः साहित्य	३५
११. काव्य साहित्य	३६–४५
१२. अध्यात्मयोग साहित्य	४६–४७
१३. उपदेश साहित्य	४८–५०
१४. कथा साहित्य	५१–५२
१५. उपसंहार	५३–५५
१६. नामसूची	५६–६२
१७. आधार ग्रंथ	६३–६४

१. भूमिका

जैन ग्रंथों की रचना आत्मसाधना के लिए होती रही है। ग्रंथकार स्वाध्याय करने का उद्देश्य मन में रखकर ग्रंथ लिखते थे। अपनी ज्ञान गरिमा का प्रदर्शन करने का विचार जैन ग्रंथकारों के मन में कभी नहीं था। ग्रंथ का अभ्यास जो भी करेगा उसे आत्मा का तात्त्विक चिंतन करने में मार्गदर्शन मिले यही भाव ग्रंथकारों के हृदय में बना रहता था। श्रमण भगवान् श्री महावीर परमात्मा से लेकर वर्तमान शताब्दी के अंतिम दशक तक ग्रन्थ रचना होती रही है। ग्रंथ रचना चार प्रकार से हुई है-

१. आगम ग्रंथों की रचना।

२. आगम ग्रंथों पर विवरण ग्रंथों की रचना।

३. आगमेतर ग्रंथों की रचना।

४. आगमेतर ग्रंथों पर विवरण ग्रंथों की रचना।

उपर्युक्त विभाजन का अपना-अपना महत्त्व है। जो भी ग्रंथ रचना की गई उसे विषय की दृष्टि से चार विभागों में बाँट कर चार अनुयोग बताए गए- द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकरणानुयोग और धर्मकथानुयोग। द्रव्यानुयोग के ग्रंथों में विश्व-व्यवस्था संबंधी तात्त्विक और तार्किक निरूपण होता है। गणितानुयोग के ग्रंथों में ज्योतिष, भूगोल आदि विषयक गणित संबंधी निरूपण होता है। चरणकरणानुयोग के ग्रंथों में जैन धर्म संबंधी आचार पद्धति का निरूपण होता है। धर्मकथानुयोग के ग्रंथों में जैन धर्म विषयक कथाओं का संग्रह होता है। जो भी ग्रंथ रचना होती है उसकी विषय परीक्षा अनुयोग के द्वारा होती है। आगम ग्रंथ, आगम ग्रंथ के विवरण, आगमेतर ग्रंथ, आगमेतर ग्रंथ के विवरण- चार अनुयोग में से किसी एक में अवश्य समाविष्ट हो जाते हैं।

१. आगम ग्रंथों की रचना

तीर्थंकर भगवान् श्री महावीर परमात्मा के समय में गणधर भगवंतों के द्वारा मूल बारह आगमों की रचना हुई। बारह आगमों को द्वादशांगी भी कहते हैं। आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांगसूत्र, स्थानांगसूत्र, समवायांगसूत्र, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथासूत्र, उपासकदशासूत्र, अंतकृद्दशासूत्र,अनुत्तरौपपातिकसूत्र, प्रश्नव्याकरणसूत्र, विपाकसूत्र

और दृष्टिवाद- ये बारह मूलभूत आगमग्रंथ हैं। इनमें से आज दृष्टिवाद उपलब्ध नहीं है। ग्यारह अंग आगमग्रंथ की रचना प्राकृत भाषा में हुई है। दृष्टिवाद की रचना संस्कृत भाषा में हुई थी ऐसा श्रीप्रभावकचरित्र में लिखा है।

अंग आगमग्रंथों के बाद अन्य आगमग्रंथों की रचना भी हुई। आज पैतालीस आगमग्रंथ उपलब्ध होते हैं। ग्यारह अंग आगमग्रंथ के रचनाकार श्री सुधर्मास्वामीजी म. थे। श्रीदशाश्रुतस्कंध, श्रीकल्पसूत्र एवं श्री व्यवहारसूत्र की रचना श्री भद्रबाहुसूरिजी म. ने की। श्री आतुरप्रत्याख्यान, श्रीचतु:शरण प्रत्याख्यान की रचना श्री वीरभद्रगणिजी म. ने की। श्री प्रज्ञापनासूत्र की रचना श्री श्यामाचार्यजी म. ने की। श्री नंदीसूत्र की रचना श्री देववाचकजी म. ने की। श्री अनुयोगद्वारसूत्र की रचना श्री आर्यरक्षितसूरिजी म. ने की। श्री दशवैकालिकसूत्र की रचना श्री शय्यंभवसूरिजी म. ने की। अन्य आगमग्रंथों के रचनाकार के नाम उपलब्ध नहीं हैं। आगमग्रंथों को तीर्थंकरवाणी का शाब्दिक अवतार माना गया है। जैन धर्म के संख्यातीत ग्रंथों में सर्वाधिक महत्त्व आगमग्रंथों का ही है।

२. आगमग्रंथों पर विवरणग्रंथ

मूलग्रंथ का अर्थविस्तार विवरण के द्वारा होता है। आगमग्रंथों के विवरण चार स्वरूप में लिखे गए हैं- निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य और टीका।

निर्युक्ति की रचना श्री भद्रबाहुसूरिजी म. ने की। आपने दस आगम ग्रंथों की निर्युक्ति लिखी है। निर्युक्ति की रचना प्राकृत भाषा में हुई है। निर्युक्ति पद्यबद्ध रचना है।

चूर्णि की रचना श्री जिनदासगणि महत्तर, श्री अगस्त्यसिंहसूरिजी म. तथा अन्य अज्ञात नाम लेखकों के द्वारा हुई है। चूर्णि प्राकृत भाषा में लिखा गया गद्यबद्ध विवरण है। आज आगमग्रंथों की १९ चूर्णि उपलब्ध है।

भाष्य की रचना श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, श्री संघदासगणिजी म. के द्वारा हुई है। भाष्य प्राकृत भाषा में लिखा गया पद्यबद्ध विवरण है।

टीका की रचना अनेक लेखकों ने की है। टीका को वृत्ति, विवरण, रहस्यार्थ, विवेचन, विस्तरार्थ, व्याख्या, अवचूरि आदि शब्दों से भी जाना जाता है। सभी शब्दों के कुछ विशेष अर्थ हैं। समानता मात्र इतनी है कि सभी शब्द संस्कृत भाषा में लिखे गए गद्य विवरण के प्रकार विशेष का ही निर्देश करते हैं।

३. आगमेतर ग्रंथों की रचना

वीरनिर्वाण संवत् के नवम शतक के बाद आगम रचना नहीं हुई। वीरनिर्वाण संवत के प्रारंभ होने से पूर्व आगमेतर ग्रंथ रचना होने लगी थी। भगवान् श्री

महावीरस्वामीजी म. के शिष्य श्री गौतमस्वामीजी म. ने पाक्षिकसूत्र, जगचिंतामणिसूत्र की रचना की थी। भगवान् श्रीमहावीरस्वामीजी म. के शिष्य श्री धर्मदासगणि जी म. ने उपदेशमाला की रचना की थी। तब से लेकर शुरू हुई आगमेतर ग्रंथ रचना की परम्परा आज तक जीवंत है। इसलिए आगमेतर ग्रंथों की संख्या अत्यंत विशाल है। ग्रंथकारों के नाम भी विशाल संख्या में है।

४. आगमेतर ग्रंथों के विवरण ग्रंथ

आगमेतर ग्रंथ प्राकृत और संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखे गए हैं। आगमेतर ग्रंथों के विवरण ग्रंथ दो स्वरूप में मिलते हैं- स्वोपज्ञ विवरण और अन्यकृत विवरण। अधिकांश विवरण ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं।

जैन ग्रंथों को विषय की दृष्टि से तेरह विभागों में बाँट कर देखने से हमें ग्रंथों के विविध आयामों का बोध मिलता है।

१. आगम संबंधी साहित्य
२. प्रकरण साहित्य
३. कर्म साहित्य
४. व्याकरण साहित्य
५. कोश साहित्य
६. दार्शनिक साहित्य
७. अलंकार साहित्य
८. छंद साहित्य
९. काव्य साहित्य
१०. अध्यात्म-योग साहित्य
११. उपदेश साहित्य
१२. कथा साहित्य
१३. प्रकीर्ण साहित्य।

इस विषय विभाजन को आदर्श मानकर हम जैन ग्रंथकारों की अर्वाचीन शृंखला का परिचय पाने की कोशिश करेंगे। पिछले सौ-डेढ़ सौ साल में जैन ग्रंथकारों ने जो भी संस्कृत-प्राकृत रचना की है उनका नाम निर्देश हम करेंगे। एक-एक ग्रंथ का परिचय लिखने का प्रयास किया जाए तो यह निबंध महानिबंध बन सकता है। हम वह कार्य आने वाले समय में अवश्य करेंगे।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक, दिगंबर, स्थानकवासी और तेरापंथी - ये चार परंपराएँ जैन धर्म की ग्रंथ रचना का आधार स्रोत है। हमने प्रत्येक परम्परा के नाम पाने की कोशिश की है। कोई ग्रंथ या ग्रंथकार का नाम अगर छूट गया हो तो हमें क्षमा करेंगे।

*

२. आगम संबंधी साहित्य

आगम साहित्य की नवरचना हो नहीं सकती। आगम साहित्य की रचना जिस काल में हुई थी उस काल में ग्रंथ कंठस्थ रखने की परंपरा थी। समय-समय के अंतराल में आगम साहित्य का परिष्करण होता गया।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा के अनुसार आगमग्रंथों का विषय परिवर्तन कभी नहीं हुआ है, लेकिन आगमग्रंथों के सूत्रों के पाठ का निर्धारण किया गया है। वीरनिर्वाण संवत् १६० के आस-पास आचार्यश्री भद्रबाहुसूरिजी म. के सान्निध्य में आगमग्रंथों के सूत्रों की वाचना रखी गई थी। कंठस्थ आगमग्रंथों की शाब्दिक रचना को सर्वांगीण शुद्ध बनाने का यह प्रथम प्रयास था। भगवान् महावीर के निर्वाण होने के बाद में एक बार बारह वर्ष का दुष्काल आने से आगमग्रंथों का अभ्यासु श्रमण वर्ग भारत के विभिन्न राज्यों में चला गया था। दुष्काल समाप्त होने पर पाटलिपुत्र में सभी श्रमणों का संमेलन हुआ। कंठस्थ आगमग्रंथों में से कुछ ग्रंथों का पाठ टूट चुका है, ऐसा लगने से श्रीभद्रबाहुसूरिजी म. ने सभी आगमग्रंथों के मूल पाठ का निर्धारण किया। आपको सभी आगमग्रंथ कंठस्थ थे। आपके द्वारा निर्धारित सूत्रपाठ सर्वमान्य हुआ।

वीरनिर्वाण संवत् ८२७ से ८४० के मध्यांतर में पुनः एक बार बारह वर्ष का दुष्काल आने से श्रमण वर्ग विभिन्न राज्यों में बिखर गया। दुष्काल समाप्त होने के बाद श्रमण वर्ग के दो संमेलन हुए। एक संमेलन मथुरा में हुआ। मथुरा के संमेलन में अध्यक्ष स्थान श्री स्कंदिलाचार्य ने लिया था। दूसरा संमेलन वल्लभी में हुआ। वल्लभी के संमेलन का अध्यक्ष स्थान श्री नागार्जुनसूरिजी म. ने लिया था। दोनों संमेलन समान समय में हुए लेकिन एक-दूसरे से कोई संपर्क न होने से दोनों की वाचना अलग हुई।

मथुरा की वाचना में श्रमण वर्ग के पास जो भी कंठस्थ आगम साहित्य था उसका पाठ निर्धारण हुआ। कुछ आगम साहित्य नष्ट हो चुका है यह बात भी मथुरा की वाचना में स्पष्ट हुई। मथुरा में आगमग्रंथों के जो पाठ निश्चित हुए उन्हे श्रीस्कंदिलाचार्य के मार्गदर्शनानुसार श्रमण वर्ग ने स्वीकार लिए। वल्लभी में जो वाचना हुई उसमें भी वहाँ उपस्थित श्रमण वर्ग को जो आगम साहित्य कंठस्थ था उसका पाठ-निर्धारण

हुआ। कुछ आगम साहित्य नष्ट हो चुका है, यह बात वल्लभी की वाचना में भी स्पष्ट हुई। वल्लभी में जो वाचना हुई उसमें कंठस्थ आगमों को लिखा गया था। श्री नागार्जुनसूरिजी म. का मार्गदर्शन मुख्य रहा।

वीरनिर्वाण संवत् ९६० के आस-पास भी बारह वर्ष का दुष्काल आया। दुष्काल समाप्त होने पर श्रमण वर्ग का संमेलन वल्लभी में हुआ। वल्लभी में यह दूसरा संमेलन था। इस संमेलन के अध्यक्ष थे श्री देवर्धिगणि क्षमाश्रमण। यह वाचना ऐतिहासिक बनी थी। संपूर्ण ग्रंथ साहित्य को अक्षरशः लिखने का निर्णय लिया गया। पुरातन वाचना के अक्षर पाठों का विमर्श हुआ। मथुरा वाचना के पाठों को 'स्कंदिली वाचना' नाम मिला। पुरातन वल्लभी वाचना के पाठों को 'नागार्जुनी वाचना' नाम मिला। द्वितीय वल्लभी वाचना में आगम लेखन हुआ उसमें मथुरा वाचना को मुख्य आधार माना गया था। पाठभेद होने पर विभिन्न पाठों को लिखकर बताया गया कि यह पाठ नागार्जुनी वाचना का है। आगम लेखन के विराट पुरुषार्थ के बाद दो लाभ सिद्ध हुए। एक, आगम पाठों का नया पाठभेद उपस्थित होने की संभावना नामशेष हुई। दो, आगमग्रंथ पुस्तकारूढ़ होने से विस्मरण और विलोप का भय कम हुआ।

वल्लभीपुर में आगम लेखन का कार्य संपन्न हो गया। श्रमण वर्ग को लगा कि कुछ विषय ग्रंथस्थ नहीं है लेकिन परंपरागत क्रम से सिखाए जाते हैं। ऐसे विषयों को ग्रंथबद्ध करने के लिए नूतन ग्रंथ रचनाएं की गईं।

आगमग्रंथों का लिखित अवतार होने से आगमग्रंथों का वांचन सरल हो गया। जो ग्रंथ गुरुमुख से सुनकर याद रखे जाते थे वो ग्रंथ लिखे गए, इसलिए ग्रंथों का स्वाध्याय व्यापक हो गया। जो कंठस्थ कर सकते थे वो कंठस्थ करके आगमग्रंथों का अभ्यास करते रहे। जो कंठस्थ नहीं कर सकते थे वो वांचन करते रहे। प्राकृत भाषा में विरचित आगमसूत्रों के अर्थ और रहस्यार्थ समझने के लिए विवरणग्रंथ की अपेक्षा विशेषतः महसूस होने लगी। आगम लेखन की विशिष्ट फलश्रुति अब आई। आगमग्रंथों पर समृद्ध टीकाएं लिखने का प्रारंभ हुआ। आगम संबंधी साहित्य की परंपरा में निर्युक्ति, चूर्णि और भाष्य का स्थान महत्त्वपूर्ण है। टीकाएँ विशेष स्थान ले सकीं क्योंकि लेखन पद्धति उपलब्ध थी। टीकाकारों को विषय-विस्तार के लिए पर्याप्त अवकाश मिला। संस्कृत भाषा के प्रचलन को टीकाओं के द्वारा गति मिली। आगमग्रंथों के टीकाकारों की सूची लंबी है।

विक्रम की आठवीं शताब्दी में श्री हरिभद्रसूरिजी म. ने अनुयोगद्वारसूत्र, नंदीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र, आवश्यकसूत्र, ओघनिर्युक्तिसूत्र, जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र, जीवाजीवाभिगमसूत्र-

इतने आगमग्रंथों पर टीकाएँ लिखीं। विक्रम की दसवीं शताब्दी में श्री शीलांकाचार्य ने आचारांग और सूत्रकृतांग पर टीकाएँ लिखी। विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में श्री शांतिसूरिजी म. ने उत्तराध्ययनसूत्र के ऊपर टीका लिखी। विक्रम की बारहवीं शताब्दी में श्री अभयदेवसूरिजी म. ने ज्ञाताधर्मकथासूत्र, स्थानांगसूत्र, समवायांगसूत्र, भगवतीसूत्र, उपासकदशासूत्र, अन्तकृद्दशासूत्र, अनुत्तरौपपातिकसूत्र, प्रश्नव्याकरणसूत्र, विपाकसूत्र, औपपातिकसूत्र और प्रज्ञापनासूत्र के ऊपर टीकाएँ लिखीं। श्रीहेमचन्द्रसूरिजी म. (मलधारी) ने विशेषावश्यकसूत्र, आवश्यकसूत्र, अनुयोगद्वारसूत्र और नंदीसूत्र पर टीकाएँ लिखीं। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में श्री मलयगिरिसूरिजी म. ने आवश्यकसूत्र, ओघनिर्युक्ति, चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र, जीवाजीवाभिगमसूत्र, ज्योतिष्करंडक, नंदीसूत्र, पिंडनिर्युक्ति, प्रज्ञापनासूत्र, बृहत्कल्पपीठिका, भगवतीसूत्र का द्वितीय शतक, राजप्रश्नीयसूत्र और व्यवहारसूत्र पर टीकाएँ लिखीं।

अन्य प्राचीन टीकाकारों में श्री द्रोणाचार्य, श्री नमिसाधु, श्री वीरगणिजी म., श्रीचन्द्रसूरिजी म., श्री तिलकाचार्य, श्री क्षेमकीर्तिसूरिजी म., श्री ज्ञानसागरसूरिजी म., श्रीकुलमंडनजी म. आदि नाम मुख्य हैं।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने आगमग्रंथों की टीकाएँ लिखी हैं–

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्रीमुक्तिविमलजी म. — कल्पसूत्र टीका

२. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म. — भगवतीसूत्र प्रशस्ति टीका

३. श्री कुलचन्द्रसूरिजी म.

१. आचारांगसूत्र टीका — २. सूत्रकृतांग टीका

३. कल्पसूत्र टीका

४. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म.

१. ऋषिभाषित टीका — २. अंगचूलिका टीका

३. वर्गचूलिका टीका — ४. सूत्रकृतांग द्वितीय संग्रहणी टीका

दिगंबर परंपरा

दिगंबर परंपरा की मान्यता है कि मूल आगमों का विच्छेद हो चुका है, अतः आगम संबंधी साहित्य दिगंबर परम्परा में उपलब्ध नहीं हैं।

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म.

१. आचारांग टीका
२. सूत्रकृतांग टीका
३. स्थानांग टीका
४. समवायांग टीका
५. व्याख्याप्रज्ञप्ति टीका
६. ज्ञाताधर्मकथा टीका
७. उपासकदशा टीका
८. अन्तकृद्दशा टीका
९. अनुत्तरौपपातिक टीका
१०. प्रश्नव्याकरण टीका
११. विपाकसूत्र टीका
१२. औपपातिक टीका
१३. राजप्रश्नीय टीका
१४. जीवाजीवाभिगम टीका
१५. प्रज्ञापना टीका
१६. सूर्यप्रज्ञप्ति टीका
१७. चन्द्रप्रज्ञप्ति टीका
१८. जंबूद्वीप्रज्ञप्ति टीका
१९. निरयावलिका टीका
२०. कल्पावतंसिका टीका
२१. पुष्पिका टीका
२२. पुष्पचूलिका टीका
२३. वृष्णिदशांग टीका
२४. उत्तराध्ययन टीका
२५. दशवैकालिक टीका
२६. नंदीसूत्र टीका
२७. अनुयोगद्वार टीका
२८. निशीथसूत्र टीका
२९. बृहत्-कल्प टीका
३०. व्यवहारसूत्र टीका
३१. दशाश्रुतस्कंध टीक
३२. आवश्यकसूत्र टीका

२. श्री हस्तीमलजी म. बृहत्-कल्पसूत्र टीका

तेरापंथी परंपरा

१. श्री महाप्रज्ञजी म. श्री आचारांगसूत्रभाष्यम् (प्राकृत)

(आगम संबंधी साहित्य लौकिक भाषा में तो पर्याप्त मात्रा में लिखा गया है। आगमों के टब्बार्थ, अनुवाद, विवेचन आदि साहित्य; गुजराती-हिन्दी-अंग्रेजी आदि भाषा में आज मिलता है। आधुनिक भाषाओं का प्रचार बढ़ने से संस्कृत-प्राकृत भाषाएँ उपेक्षित होने लगी हैं। जहाँ गुजराती-हिन्दी-अंग्रेजी में लिखा गया आगम संबंधी साहित्य अति विशाल संख्या में है वहाँ संस्कृत-प्राकृत भाषा में लिखा गया साहित्य अल्प संख्या में है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और तेरापंथी परंपरा को संमिलित करे तो भी आगमग्रंथों पर लिखी गई टीकाओं की संख्या ४३ के आसपास पहुंचती है।)

*

३. प्रकरण साहित्यः टीकाग्रंथ

आगमों में अनेक अनेक विषयों का विश्लेषण है। किसी एक विषय को मुख्य बनाकर नूतन ग्रंथ लिखा जाए उसे प्रकरण कहते हैं। एकाधिक विषय को लेकर नूतन ग्रंथ लिखा जाए वह भी प्रकरण ग्रंथ ही होता है।

प्राचीन ग्रंथकारों ने आगमग्रंथों पर आधारित अनेकविध ग्रंथ लिखे हैं। प्रकरणग्रंथ प्राकृत में भी होते हैं और संस्कृत में भी। प्रकरण ग्रंथों के विषय की गहनता ने प्रकरण ग्रंथ पर टीका लिखने की प्रेरणा दी। प्रकरण ग्रंथों पर प्राचीन टीकाएँ दो स्वरूप में मिलती हैं- स्वोपज्ञ टीका और अन्यकृत टीका।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने प्राचीन प्रकरण ग्रंथों पर टीकाएं लिखी हैं।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री धर्मसूरिजी म. नवतत्त्वसुमंगला-टीका

२. श्री उदयसूरिजी म. जंबूद्वीपसंग्रहणी-टीका

३. श्री लावण्यसूरिजी म.

१. तत्त्वार्थत्रिसूत्रीप्रकाशिका २. द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका-टीका

४. श्री अमृतसूरिजी म. सर्वज्ञसिद्धि-टीका

५. श्री दर्शनसूरिजी म. तत्त्वार्थविवरणगूढार्थदीपिका

६. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म. लग्नशुद्धि-टीका

७. श्री भद्रंकरसूरिजी म. ललितविस्तरा-टीका

८. श्री कुलचंद्रसूरिजी म.

१. विंशतिविंशिका-टीका २. मार्गपरिशुद्धि-टीका

९. श्री यशोविजयजी म.

१. भाषारहस्य-टीका २. षोडशक-टीका

३. द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका-टीका

१०. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म.

१. सामाचारीप्रकरण-टीका
२. लोकतत्त्वनिर्णय-टीका
३. नानाचित्त प्रकरण-टीका
४. उपदेशरत्नकोश-टीका
५. दुःषमगंडिका-टीका
६. विसंवादप्रकरण-टीका
७. सद्बोधचंद्रोदय-टीका
८. इष्टोपदेश-टीका
९. अष्टावक्रगीता-टीका
१०. हितोपनिषद्
११. बोटिकोपनिषद्
१२. तत्त्वोपनिषद्
१३. वादोपनिषद्
१४. वेदोपनिषद्
१५. शिक्षोपनिषद्
१६. ज्ञानपंचकविवरण-टीका
१७. अवधूतगीता-टीका
१८. जीवदयाप्रकरण-टीका

११. श्रीहितवर्धनविजयजी म. सम्यक्त्वरहस्य-टीका

१२. श्री गुणहंसविजयजी म. सामाचारीप्रकरण-टीका

१३. श्रीरत्नबोधिविजयजी म. धर्माचार्यबहुमानकुलक-टीका

दिगंबर परम्परा

दिगंबर परंपरा में आगमग्रंथों का स्थान प्राचीन ग्रंथों ने लिया है। प्राचीन ग्रंथों पर प्राचीन टीकाएँ भी लिखी गई हैं।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने प्राचीन ग्रंथों पर टीकाएँ लिखी हैं-

१. श्री सुधर्मसागरजी म.

१. पुरुषार्थानुशासन-टीका
२. रयणसार-टीका
३. प्रतिक्रमण-टीका
४. श्रावकाचार-टीका
५. परमार्थोपदेशगुणभूषण-टीका

२. श्री प्रणम्यसागरजी म.

१. लिंगशीलपाहुड-टीका
२. समाधितंत्र-टीका
३. चैतन्यचन्द्रोदय-टीका
४. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय-टीका

५. आत्मानुशासन-टीका
६. बारसाणुवेक्खा-टीका

३. मूलचन्द्र शास्त्री

१. षोडशकप्रकरण टीका
२. हर्षसूरिप्रबंध-टीका

स्थानकवासी परंपरा

तेरापंथी परंपरा

संभवतः दोनों परंपरा में प्राचीन ग्रंथ रचना न होने से प्राचीन ग्रंथ की टीकाएँ भी नहीं हैं।

(अर्वाचीन ग्रंथकारों के द्वारा लिखी हुई टीकाओं की संख्या ४७ के आस-पास है। प्रकरण ग्रंथों के हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी आदि भाषा में अनुवाद एवं विवेचन अनेक विद्वानों ने किए हैं।)

*

४. प्रकरण साहित्य : नूतन रचना

आगम ग्रंथों की संख्या सीमित हैं। आगम ग्रंथ के आधार पर नूतन ग्रंथों की रचना विशाल संख्या में हुई है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा में श्री पादलिप्तसूरिजी म., श्री उमास्वातिजी म., श्री हरिभद्रसूरिजी म., श्री हेमचन्द्रसूरिजी म., श्री चन्द्रप्रभसूरिजी म., श्री नेमिचन्द्रसूरिजी म., श्री मुनिचन्द्रसूरिजी म., श्री जिनवल्लभसूरिजी म., श्री जिनदत्तसूरिजी म., श्री यशोदेवसूरिजी म., श्री विनयविजयजी म., श्री यशोविजयजी म. आदि अनेक ग्रंथकारों ने अपने-अपने समय में नूतन ग्रंथ रचना की थी।

दिगंबर परंपरा में श्री गुणधर जी, श्री पुष्यदंत-भूतबलिजी, श्री कुंदकुंदाचार्य, श्री उमास्वामिजी, श्री वट्टकेरजी, श्री शिवार्यजी, श्री समंतभद्रजी, श्री देवसेनजी आदि अनेक ग्रंथकारों ने अपने-अपने समय में नूतन ग्रंथ रचना की थी।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने नूतन ग्रंथ रचना की है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री लब्धिसूरिजी म.

१. तत्त्वन्यायविभाकर:
२. तत्त्वन्यायविभाकर-टीका
३. सूत्रार्थमुक्तावलि:
४. सूत्रार्थमुक्तावलि-टीका

२. श्री आनंदसागरसूरिजी म.

१. तत्त्वार्थपरिशिष्टम्
२. ईर्यापथपरिशिष्टम्
३. दृष्टिसंमोहविचार:
४. द्रव्यबोधत्रयोदशी
५. द्वेषजयद्वादशिका
६. धर्मतत्त्वविचार:
७. धर्मास्तिकायादिविचार:
८. निसर्गदशी
९. नयानुयोगाष्टकम्
१०. प्रव्रज्याविधानकुलकम्
११. मंगलविचार:
१२. लोपकपाटीशिक्षा

१३. विधिविचारः
१४. सद्धर्माष्टकम्
१५. जैनपूर्णत्वाष्टादशिका
१६. जमालिमतखंडनम्
१७. सौख्यषोडशिका
१८. सिद्धषट्त्रिंशिका
१९. हरिभद्रसूरिसमयदीपिका
२०. ज्ञानपद्यावलिः
२१. परिहार्यमीमांसा
२२. आराधनामार्गः
२३. अचित्ताहारद्वात्रिंशिका
२४. अधिगमसम्यक्त्वैकादशी
२५. अनुक्रमपंचदशिका
२६. अर्हत्-शतकम्
२७. आचेलक्यम्
२८. मिथ्यात्वविचारः
२९. ईर्याद्वापंचाशिका
३०. ईर्यापथिकानिर्णयः
३१. उत्सर्पणार्थविचारः
३२. उत्सूत्रभाषणफलम्
३३. उद्यमपंचदशिका
३४. उपकारद्वादशिका
३५. क्रियाद्वात्रिंशिका
३६. क्षमाविंशतिका
३७. क्षायोपशमिकभावविचारः
३८. चैत्यद्रव्योत्सर्पणम्
३९. जयसोमसिक्खा
४०. ज्ञानपंचविंशतिका
४१. तात्त्विकविमर्शः
४२. दुष्प्रतिकारविचारः
४३. देवायभंजकशिक्षा
४४. देवनिर्याणविचारः
४५. पर्युषणापरावृतिः
४६. पर्युषणाप्रभा
४७. पर्षदिकल्पवाचना
४८. पौषधविमर्शः
४९. पौषधपरामर्शः
५०. वीरविवाहविचारः
५१. व्यवहारा-व्यवहारराशिः
५२. श्रमणधर्मसहस्त्री
५३. श्रमणो भगवान् महावीरः
५४. श्रुतशीलचतुर्भंगी
५५. संलक्षणानि
५६. संहननानि
५७. सामायिकेर्यास्थाननिर्णयः
५८. हिंसकत्वाहिंसकत्वे
५९. पंचसूत्रतर्कावतारः
६०. पंचसूत्रवार्तिकम्
६१. पंचसूत्री
६२. आगमोद्धारककृतिसंदोहः

३. श्री नंदनसूरिजी म.

१. प्रतिष्ठातत्त्वम्
२. आचेलक्यतत्त्वम्
३. पर्युषणातिथिविनिश्चयः

४. श्री जगच्चन्द्रसूरिजी म.

१. द्रव्यपरिमाणप्रकरणम्
२. क्षेत्रस्पर्शनाप्रकरणम्

५. श्री सौम्यज्योतिश्रीजी म. अष्टादशसहस्रशीलांगरथमाला

६. चिन्नास्वामी शासनजयपताका

८. राजनारायण शर्मा अर्हत्तिथिभास्करः

दिगंबर परंपरा

१. श्री ज्ञानसागरजी म.

१. प्रवचनसारः
२. सम्यक्त्वसारशतकम्

२. श्री कुंथुसागरजी म.

१. शांतिसुधासिंधुः
२. श्रावकधर्मप्रदीपः
३. मुनिधर्मप्रदीपः
४. मोक्षमार्गप्रदीपः
५. बोधामृतसारः
६. निजात्मशुद्धिभावना
७. ज्ञानामृतसारः
८. लघुबोधामृतसारः
९. स्वरूपदर्शनसूर्यः
१०. स्वप्नदर्शनसूर्यः
११. नरेशधर्मदर्पणः
१२. लघुप्रतिक्रमणम्
१३. लघुज्ञानामृतसारः
१४. लघुसुधर्मोपदेशसारः
१५. भावत्रयफलदर्शी
१६. सुवर्णसूत्रम्

३. श्री सुधर्मसागरजी म. सुधर्मध्यानप्रदीपः

४. पन्नालाल साहित्याचार्य

१. सम्यक्त्वचिंतामणिः
२. सद्ज्ञानचन्द्रिका
३. सम्यक्चारित्रचिंतामणिः
४. धर्मकुसुमोद्यानम्
५. सामायिकपाठः

स्थानकवासी परंपरा

१.श्री घासीलालजी म.

१. गणधरवादः
२. गृहिधर्मकल्पतरु
३. मोक्षपदप्रकरणम्
४. जैनागमतत्त्वदीपिका
५. सूक्तिसंग्रहः
६. तत्त्वप्रदीपः
७. कल्पसूत्रम्
८. तत्त्वार्थसूत्रम्

२. श्री रत्नचन्द्रजी म. कर्तव्यकौमुदी

तेरापंथी परंपरा

१. श्री तुलसीजी म.

१. जैनसिद्धांतदीपिका
२. पंचसूत्रम्
३. शिक्षाषण्णवतिः
४. कर्तव्यषट्त्रिंशिका
५. संघषट्त्रिंशिका

(अर्वाचीन ग्रंथकारों ने कुल मिलाकर ११२ के आस-पास नूतन प्रकरण ग्रंथों की रचना की है। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी आदि भाषा में जैन तत्त्वज्ञान विषयक अनेक-अनेक पुस्तक लिखे गए हैं।)

*

५. कर्म साहित्य

कर्मसिद्धांत जैन धर्म का विशिष्ट तत्त्वज्ञान है। कर्म विषयक विश्लेषण और विवेचन आगमग्रंथों में उपलब्ध है। कर्मविषयक निरूपण के लिए अनेक आगमेतर ग्रंथों की रचना हुई है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा अनुसार – श्री शिवशर्मसूरिजी म., श्रीचंद्रर्षि महत्तर, श्री जिनवल्लभसूरिजी म., श्री देवेन्द्रसूरिजी म. आदि अनेक ग्रंथकारों ने कर्म साहित्य की नूतन रचना की थी।

दिगंबर परंपरा अनुसार श्री नेमिचंद्रजी, श्री चामुंडरायजी, श्री माधवचंद्रजी आदि अनेक ग्रंथकारों ने कर्म साहित्य के नूतन ग्रंथों का सर्जन किया है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने कर्म विषयक नूतन ग्रंथों की रचना की है

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

प्राचीन ग्रंथों पर टीकाग्रंथ

१. श्री नंदनसूरिजी म.

१. चतुर्थ कर्मग्रंथ टीका　　　२. द्वितीय कर्मग्रंथ टीका

नूतनग्रंथ रचना

१. श्री प्रेमसूरिजी म.

१. मार्गणाद्वारविवरणम्　　　२. कर्मसिद्धिः

३. संक्रमकरणम्

२. श्री नंदनसूरिजी म.　　　समुद्घाततत्त्वम्

३. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.　　　कर्मप्रवादमीमांसा

४. श्री वीरशेखरसूरिजी म.

१. बंधविहाणं　　　२. बंधविहाणउत्तरपयडिस्थानप्ररूपणा–१

३. बंधविहाणउत्तरपयडिस्थानप्ररूपणा–२

४. बंधविहाणउत्तरपयडिभूयस्कारादिबंध:-१

५. बंधविहाणउत्तरपयडिभूयस्कारादिबंध:-२

६. बंधविहाणउत्तरपयडिभूयस्कारादिबंध:-३

५. श्री गुणरत्नसूरिजी म.

१. खवगसेढी २. खवगसेढी टीका

३. उपशमनाकरणम् ४. बंधविहाणमूलपयडिबंधटीका

६. श्री जगच्चंद्रसूरिजी म.

१. बंधविहाणमूलपयडिठिईबंधटीका २. बंधविहाणउत्तरपयडिठिईबंधटीका

७. श्री विचक्षणसूरिजी म. बंधविहाणउत्तरपयडिबंधटीका

८. श्री जितेन्द्रसूरिजी म. बंधविहाणउत्तरपयडिरसबंधटीका

९. श्री जयघोषसूरिजी म. बंधविहाणउत्तरपयडिपएसबंधटीका

१०. श्री राजशेखरसूरिजी म. बंधविहाणमूलपयडिपएसबंधटीका

११. श्री जयशेखरसूरिजी म. बंधविहाणमूलपयडिरसबंधटीका

१२. श्री बुद्धिसागरसूरिजी म.

१. कर्मयोग: २. कर्मप्रकृति:

दिगंबर-स्थानकवासी-तेरापंथी परंपरा में कर्म विषयक नूतन साहित्य की रचना संभवत: नहीं हुई है।

(अर्वाचीन ग्रंथकारों ने कुल मिलाकर २६ के आस-पास कर्म विषयक नूतन ग्रंथों की रचना की है। कर्म साहित्य संबंधी हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी पुस्तकें विशाल संख्या में लिखी गई हैं।)

*

६. व्याकरण साहित्य

प्राकृत और संस्कृत भाषा के सांगोपांग अध्ययन के लिए व्याकरण ग्रंथों की रचना प्राचीन ग्रंथकारों ने की है।

श्वेतांबर परंपरा में- श्री बुद्धिसागरसूरिजी म., श्री हेमचंद्रसूरिजी म., श्री मलयगिरिसूरिजी म., श्री मेघविजयजी म., श्री विनयविजयजी म. आदि ग्रंथकारों ने अपने-अपने समय में नूतन व्याकरण ग्रंथों की रचना की थी।

दिगंबर परम्परा में - त्रिभुवन, श्री देवनंदिजी, श्री शाकटायनजी आदि ग्रंथकारों ने नूतन व्याकरण ग्रंथों की रचना की थी।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने प्राकृत और संस्कृत दोनों भाषा के व्याकरण की रचना की है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

प्राचीन व्याकरणों पर टीका

१. श्रीचंद्रसागरसूरिजी म. सिद्धहेमशब्दानुशासन-टीका

२. श्री लावण्यसूरिजी म.

१. सिद्धहेमशब्दानुशासनन्यासअनुपूर्तिः २. न्यायार्थसिंधुतरंगवृत्तिः

३. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.

१. सिद्धहेमशब्दानुशासनपद्य-टीका २. प्राकृतव्याकरणपद्य-टीका

३. सिद्धहेमशब्दानुशासनप्रशस्तिविवरणम्

४. श्री दर्शनरत्नसूरिजी म. सिद्धहेमशब्दानुशासन-टीका

श्री विमलरत्नसूरिजी म.

नूतन व्याकरण ग्रंथ की रचना

१. श्री नेमिसूरिजी म.

१. बृहद् हेमप्रभा २. लघु हेमप्रभा

२. श्री आनंदसागरसूरिजी म.

१. सिद्धप्रभा २. मध्यमसिद्धप्रभा

३. लघुसिद्धप्रभा

३. श्री लावण्यसूरिजी म.

१. हेमचंद्रिका २. धातुरत्नाकरः

दिगंबर परंपरा

कोई नूतन व्याकरण ग्रंथ की रचना संभवतः नहीं हुई।

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म.

१. आर्हत्-व्याकरणम् २. आर्हत्-व्याकरण-टीका

३. प्राकृतकौमुदी ४. प्राकृतचिंतामणिः

५. न्यायरत्नसारः ६. न्यायरत्नावलिः

७. न्यायरत्नावलि-टीका

२. श्री रत्नचंद्रजी म.

१. अर्धमागधीव्याकरणम् २. अर्धमागधीव्याकरण-टीका

तेरापंथी परंपरा

१. श्री चौथमलजी म.

१. भिक्षुशब्दानुशासनम् २. भिक्षुशब्दानुशासन-उणादिवृत्तिः

३. भिक्षुन्यायदर्पणबृहद्वृत्तिः ४. कालूकौमुदी

२. श्री महाप्रज्ञजी म. तुलसीमंजरी (प्राकृतव्याकरणम्)

३. श्री चंदनमलजी म.

१. भिक्षुशब्दानुशासनलघुवृत्तिः २. भिक्षुलिंगानुशासनवृत्तिः

४. रघुनंदन शर्मा

१. भिक्षुशब्दानुशासनबृहद्वृत्तिः २. भिक्षुलिंगानुशासनम्

५. **श्री धनराजजी म.** भिक्षुशब्दानुशासनलघुवृत्तिः

६. **श्री सोहनलालजी म.** —तुलसीप्रभाप्रक्रिया

(अर्वाचीन ग्रंथकारों ने प्राकृत संस्कृत भाषा के जो नए व्याकरण ग्रंथ लिखे हैं उनकी संख्या ३४ के आस-पास है। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी में लिखी गई मार्गदर्शिकाएँ भी विशाल संख्या में हैं जो प्राकृत-संस्कृत भाषा का अध्ययन करने में उपयोगी हैं।)

*

७. कोश साहित्य

शब्दों के विविध अर्थ का बोध कोश के द्वारा होता है। प्रत्येक भाषा का स्वतंत्र शब्दकोश होता है। शब्द और अर्थ का संबंध व्याकरण से है। कोश की रचना जिसने की उसके संप्रदाय का नाम कोश के साथ जुड़ जाता है। जैन ग्रंथकारों ने कोश की रचना की है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा में- धनपाल, धनंजय, श्री हेमचंद्रसूरिजी म., श्री महेन्द्रसूरिजी म., श्री वल्लभगणिजी म., श्री जिनदेवमुनि, श्री सहजकीर्तिजी म., श्री ज्ञानविमलसूरिजी म., श्री हर्षकीर्तिसूरिजी म., श्री साधुसुन्दरसूरिजी म. श्रीसुधाकलशजी म., श्री अमरचंद्रसूरिजी म. आदि अनेक कोशकार हुए हैं।

दिगंबर परंपरा में-श्रीअमरकीर्तिजी, श्रीधरसेनमुनि, श्रीअसग आदि कोशकार हुए हैं।

प्राचीन कोश की रचना श्लोकबद्ध होती थी। अकारादिक्रम की योजना का प्रचलन प्राचीनकोशग्रंथों में नहीं है। आधुनिक कोश में श्लोकबद्ध रचना नही है और अकारादिक्रम की वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग है। आधुनिक कोश का संपादन अतिशय श्रमसाध्य होता है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने नूतन कोशग्रंथों का संपादन किया है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री राजेन्द्रसूरिजी म.

१. अभिधानराजेन्द्रकोशः २. पाईयसद्दंबुही

२. श्री आनंदसागरसूरिजी म.

१. अल्पपरिचितसैद्धांतिककोशः २. लघुतमनामकोशः

३. श्री मुक्तिविजयजी म. शब्दरत्नमहोदधिः

४. हरगोविंददास शेठ पाईअसद्दमहण्णवो

५. श्री हेमचंद्रसूरिजी म. अभिधानचिंतामणिनाममाला

(परिशिष्टस्थ-सार्थशब्दानुक्रमः)

६. श्री मुक्तिचंद्रसूरिजी म. शब्दमाला

श्री मुनिचंद्रसूरिजी म.

७. श्री पूर्णचंद्रविजयजी म. अभिधानव्युत्पत्तिप्रक्रियाकोशः

श्री दिव्यरत्नविजयजी म.

श्री मुनिचंद्रविजयजी म.

श्री महाबोधिविजयजी म.

८. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म. अनेकार्थसहस्त्री

९. श्री दीपरत्नसागरजी म.

१. आगमशब्दकोषः २. आगमनामकोषः

१०. श्री विनयरक्षितविजयजी म. आगमपद्यानामकारादिक्रमः

११. उदयचंद जैन प्राकृत हिंदीकोश

१२. अमृतलाल सलोत संस्कृत धातुकोश

दिगंबर परंपरा

१. जिनेन्द्रवर्णीजी जैनेन्द्रसिद्धान्तकोशः

२. वेलणकरजी जिनरत्नकोशः

३. बी. एल. जैन बृहज्जैनशब्दार्णवः

४. बालचंद्र सिद्धांतशास्त्री जैनलक्षणावली

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म.

१. श्रीलालनाममालाकोषः २. नानार्थोदयसागरकोषः

३. शिवकोषः

२. श्री रत्नचंद्रजी म.

१. जैनागमकोशः २. अर्धमागधीकोशः

तेरापंथी परंपरा

१. श्री चंद्रजी म.	आगमशब्दकोश:
२. श्री कुसुमप्रज्ञाजी म.	एकार्थकशब्दकोश:
३. श्री सिद्धप्रज्ञाजी म.	निरुक्तकोश:
श्री निर्वाणश्रीजी म.	
४. श्री अशोकश्रीजी म.	देशीशब्दकोश:
श्री विमलप्रज्ञाजी म.	
श्री सिद्धप्रज्ञाजी म.	
श्री कुसुमप्रज्ञाजी म.	

अन्य

१. मोहनलाल बांठिया

१. लेश्याकोश　　　२. क्रियाकोश

३. वर्धमानजीवनकोश

(अर्वाचीन ग्रंथकारों द्वारा संपादित कोशग्रंथों की संख्या ३१ के आस-पास है। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी भाषा के कोश तो अनेक हैं।)

*

८. दार्शनिक साहित्य

धर्मतत्त्व का सूक्ष्म चिंतन करना यह दर्शन है। जैन धर्म के अनुसार स्याद्वाद, सातनय, प्रमाण आदि विषयक तर्कबद्ध चर्चा-दार्शनिक साहित्य में होती है।

श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा अनुसार श्री सिद्धसेन दिवाकरजी म., श्री मल्लवादीसूरिजी म., श्री सिंहगणिजी म., श्री हरिभद्रसूरिजी म., श्रीसिद्धर्षिगणिजी म., श्री अभयदेवसूरिजी म., श्री चंद्रप्रभसूरिजी म., श्री शांतिसूरिजी म., श्री मुनिचंद्रसूरिजी म., श्री वादिदेवसूरिजी म., श्री मलयगिरिसूरिजी म., श्री हेमचंद्रसूरिजी म., श्री रामचंद्रसूरिजीम., श्री रत्नप्रभसूरिजी म., श्री यशोविजयजी म., आदि अनेक ग्रंथकारों ने दार्शनिक साहित्य का नवसर्जन किया।

दिगंबर परंपरा अनुसार श्रीसमंतभद्रजी, श्री अकलंकजी, श्री विद्यानंदजी, श्री माणिक्यनंदीजी, श्री अनंतवीर्यजी म., श्री कनकनंदिजी, श्री प्रभाचंद्रजी, श्री वादिराजजी, श्री वसुनंदिजी, श्री अनंतकीर्तिजी आदि के द्वारा दार्शनिक साहित्य का नवसर्जन हुआ है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने दार्शनिक साहित्य का नवसर्जन किया है।

प्राचीन दार्शनिक ग्रंथों पर टीका

श्वेतांबर परंपरा

१. श्री नेमिसूरिजी म.

१, सम्मतितर्कव्याख्यानम् २. न्यायालोक-टीका

३. जैनन्यायखंडनखाद्यविवरणम् ४. अनेकान्तव्यवस्था-टीका

२. श्री लब्धिसूरिजी म.

१. सम्मतितत्त्वसोपानम् २. द्वादशारनयचक्रविषमपदविवेचनम्

३. श्री लावण्यसूरिजी म.

१. शास्त्रवार्तासमुच्चय-टीका २. अनेकांतव्यवस्था-टीका

३. जैनतर्कभाषा-टीका ४. नयरहस्य-टीका

५. सप्तभंगीनयप्रदीप-टीका ६. नयोपदेशस्वोपज्ञव्याख्यावृत्तिः

४. श्री नंदनसूरिजी म. स्याद्वादरहस्यपत्रविवरणम्

५. श्री दर्शनसूरिजी म.

१. सम्मतितत्त्वमहार्णवावतारिका २. महावीरस्तवकल्पलतिका

६. श्री उदयसूरिजी म. जैनतर्कभाषा-टीका

७. श्री अमृतसूरिजी म. स्याद्वादकल्पतावतारिका

८. श्री शिवानंदविजयजी म.

१. वादमाला-टीका २. धर्मपरीक्षाटीप्पणम्

३. अयोगव्यवच्छेदिकावृत्तिः

९. श्री शुभंकरसूरिजी म.

१. जैनतर्कभाषा टीका २. अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका टीका

३.अयोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका टीका

१०. श्री न्यायविजयजी म. प्रमाणपरिभाषा टीका

११. श्रीचन्द्रगुप्तसूरिजी म. व्याप्तिपंचकरहस्यविवरणम्

१२. श्री कीर्तियशसूरिजी म. सम्मतितर्कटीका

१३. श्री यशोविजयजी म.

१. वादमाला टीका २. न्यायालोकटीका

३. स्याद्वादरहस्य टीका

१४. श्री उदयवल्लभविजयजी म. जैन्नतर्कभाषाविवरणम्

१५. श्री गुणहंसविजयजी म.

१. सिद्धांतलक्षणटीका २. व्याप्तिपंचक-टीका

१६. श्री राजधर्मविजयजी म. गूढामृतलीला (व्याप्तिपंचकटीका)

नूतन ग्रंथ रचना

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री नेमिसूरिजी म.

१. न्यायसिंधुः
२. नयोपनिषद्
३. सप्तभंगीउपनिषद्
४. प्रतिमामार्तंडः
५. स्पृश्यास्पृश्यनिर्णयः
६.अनेकांतत्तत्त्वमीमांसा
७. अनेकांतोपनिषद्

२. श्री बुद्धिसागरसूरिजी म. जैनस्याद्वादउक्तावलिः

३. श्री न्यायविजयजी म.

१. न्यायतीर्थप्रकरणम्
२. न्यायकुसुमांजलिः
३. अनेकांतविभूतिः

४. श्री दर्शनसूरिजी म. स्याद्वादबिंदुः

५. श्री नंदनसूरिजी म.

१. जैनसिद्धांतमुक्तावलिः
२. जैनसिद्धांतमुक्तावलि-टीका
३. जैनतर्कसंग्रहः

६. श्री उदयसूरिजी म.

१. मूर्तिमंतव्यमीमांसा
२. मूर्तिपूजायुक्तिबिंदुः

७. श्री लावण्यसूरिजी म. नयगोचरभ्रमनिवारणम्

८. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.

१. जगत्कर्तृत्वनिरासविंशिका
२. स्वाध्यायभाष्यम्

९. श्री शिवानंदविजयजी म.

१. सप्तभंगीमीमांसा
२. निक्षेपमीमांसा
३. जगत्कर्तृत्वमीमांसा

१०. श्री शीलचंद्रसूरिजी म. जैनतर्कसंग्रह-टीका

११. श्री अभयशेखरसूरिजी म.

१. सप्तभंगीविंशिका	२. सप्तभंगीविंशिका-टीका
३. निक्षेपविंशिका	४. निक्षेपविंशिका-टीका
५. नयविशिंका	६. नयविशिंका-टीका

दिगंबर परंपरा

१. दरबारीलालजी पंडित	न्यायदीपिकाटिप्पणम्
२. चैनसुखदास न्यायतीर्थ	जैनदर्शनसारः
३. मूलचंद्र शास्त्री	न्यायरत्नम्

स्थानकवासी परंपरा

दार्शनिक साहित्य रचना संभवतः नही हुई है।

तेरापंथी परंपरा

१. श्री तुलसीजी म.	भिक्षुन्यायकर्णिका
२. श्री नत्थमलमुनि (बागौर)	
१. युक्तिवादः	२. अन्योपदेशः
३. श्री कानमलजी म.	तुलसीन्यायप्रवेशिका

(अर्वाचीन ग्रंथकारों ने दार्शनिक साहित्य के जो ग्रंथ लिखे उसकी संख्या ७० के आस-पास है। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी में लिखे गये दार्शनिक ग्रंथों की संख्या विशाल है।)

*

९. अलंकार साहित्य

रस-अलंकार से समृद्ध रचना को काव्य कहते हैं। अलंकार साहित्य में काव्यतत्त्व का विवेचन होता है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा में श्री हेमचंद्रसूरिजी म., वाग्भट्ट, श्री नरेन्द्रप्रभसूरिजी म., श्री जयमंगलसूरिजी म., मंडनमंत्री, श्री नमिसाधु आदि अनेक ग्रंथकारों ने अलंकारग्रंथों की रचना की है।

दिगंबर परंपरा में श्री जिनसेन, पं. आशाधर आदि ग्रंथकारों ने अलंकार ग्रंथों की रचना की है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने अलंकार साहित्य की रचना की है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. प्राचीन ग्रंथ पर टीका

१. श्री लावण्यसूरिजी म. काव्यानुशासनटीका

२. नूतन ग्रंथ रचना

१. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.

१. काव्यविमर्शः २. साहित्यशिक्षामंजरी

३. साहित्यशिक्षामंजरी-टीका

दिगंबर, स्थानकवासी और तेरापंथी परंपरा में संभवतः अलंकार साहित्य की नूतन रचना नहीं हुई है।

(अर्वाचीन ग्रंथकारों के द्वारा विरचित अलंकार साहित्य के ग्रंथों की संख्या ४ के आस-पास है।)

*

१०. छन्दः साहित्य

पद्य रचना के विविध प्रकार का परिचय छन्दः साहित्य से होता है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा में श्री हेमचन्द्रसूरिजी म. आदि ग्रंथकारों ने छन्दः साहित्य की रचना की है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने छन्दः साहित्य की रचना की है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. प्राचीन ग्रंथ पर टीका

१. श्री लावण्यसूरिजी म. छन्दोऽनुशासन टीका

२. नूतन ग्रंथ रचना

१. श्री जिनेन्द्रसूरिजी म. छन्दोऽमृतरसः

दिगंबर परंपरा

संभवतः नवरचना नहीं हुई है।

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म. वृत्तबोधः

तेरापंथी परंपरा

संभवतः नवरचना नहीं हुई है।

(अर्वाचीन ग्रंथकारों के द्वारा विरचित छन्दःसाहित्य के ग्रंथों की संख्या ३ के आस-पास है।)

*

११. काव्य साहित्य

रस-अलंकार से समलंकृत गद्य-पद्य रचना को काव्य कहते हैं। काव्य रचना की प्रवृत्ति ग्रंथकारों के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा में श्री पादलिप्तसूरिजी म., श्री उद्योतनसूरिजी म., धनपाल, जंबूकवि, श्री रामचंद्रसूरिजी म., अमरचंद्रसूरिजी म., अभयदेवसूरिजी म., श्री उदयप्रभसूरिजी म., वाग्भट्ट, श्री चारित्रसुंदरजी म., श्री देवविमलजी म., श्री मेघविजयजी म., श्री विनयविजयजी म. आदि अनेक ग्रंथकारों ने महाकाव्य और खंडकाव्य की रचना की है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने काव्यसाहित्य का सर्जन किया है-

१. प्राचीन काव्यों पर टीका

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री नेमिसूरिजी म. रघुवंशसर्गद्वय-टीका

२. श्री लावण्यसूरिजी म. तिलकमंजरी टीका

३. श्री अमृतसूरिजी म.

१. सप्तसंधानमहाकाव्य टीका
२. शांतिनाथ महाकाव्य टीका

४. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.

१. आर्षभीयचरितमहाकाव्य-टीका
२. स्तुतिचतुर्विंशतिका-टीका
३. मुद्रितकुमुदचंद्र-टीका
४. अनुभूतसिद्धसारस्वतस्तव-टीका
५. पंचविंशतिकुसुमांजलि-टीका
६. रामचंद्रद्वात्रिंशिका-टीका
७. इन्दुदूत-टीका
८. गौडीपार्श्वनाथस्तव-टीका
९. समस्यास्तव-टीका

४. श्री शुभंकरसूरिजी म. वीतरागस्तव-टीका

५. श्री भद्रंकरसूरिजी म. विजयोल्लास महाकाव्य-टीका

६. श्री मुनिचंद्रसूरिजी म. शालिभद्रमहाकाव्य-टीका

श्री मुक्तिचंद्रसूरिजी म.

७. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म. प्रार्थनोपनिषद्

८. श्री रत्नबोधिविजयजी म. जयतिहुअणस्त्रतोत्रवृत्ति

९. रम्यरेणु

१. पणिपीयूषपयस्विनी २. वज्रस्वामीचरित-अन्वयः

१०. श्री महायशाश्रीजी म. चतुर्विंशति चैत्यवंदना-टीका

२.महाकाव्य की रचनाएँ

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री सुशीलसूरिजी म. लावण्यसूरि महाकाव्यम्

२. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म. वज्जचरियं (प्राकृत)

३. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म.

१. सिद्धान्तमहोदधिमहाकाव्यम् २. समतासागरमहाकाव्यम्

३. भुवनभानवीयमहाकाव्यम्-सवार्तिकम्

४. श्री मोक्षरतिविजयजी म. रामचंद्रीयमहाकाव्यम्

५. श्री प्रशमरतिविजयजी म. माणिभद्रमहाकाव्यम्

६. श्री रत्नबोधिविजयजी म. समतामहोदधिमहाकाव्यम्

७. नित्यानंद शास्त्री

१. पुण्यचरितमहाकाव्यम् २. क्षमाकल्याणचरितम्

८. हीरालाल हंसराज विजयानंदाभ्युदयमहाकाव्यम्

दिगंबर परंपरा

१. श्री ज्ञानसागरजी म.

१. जयोदयमहाकाव्यम् २. वीरोदयमहाकाव्यम्

३. सुदर्शनोदयमहाकाव्यम् ४. समुद्रदत्तचरितमहाकाव्यम्

५. वीरेन्द्रशर्माभ्युदयमहाकाव्यम्

२. मूलचंद्र शास्त्री — लोकाशाहमहाकाव्यम्

३. बालचंद्र शास्त्री स्वर्णाचलमहाकाव्यम्

४. उदयचंद जैन बाहुबलिमहाकाव्यम्

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म.

१. लोकाशाहमहाकाव्यम् २. शांतिसिंधुमहाकाव्यम्

२. श्री देवेन्द्रमुनिजी म. अमरसिंहमहाकाव्यम्

३. श्री मिश्रीमलजी म. १.पांडवयशोरसायनम्

(कड़क मिश्री) २. रामयशोरसायनम्

तेरापंथी परंपरा

१. श्री नत्थमलमुनि (बागौर) भिक्षुमहाकाव्यम्

२. रघुनंदन शर्मा तुलसीमहाकाव्यम्

३. खंडकाव्य की रचनाएँ

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री लब्धिसूरिजी म. चैत्यवंदनचतुर्विंशतिः

२. श्री न्यायविजयजी म.

१. वीरविभूतिः २. महात्मविभूतिः

३. भक्तगीतम् ४. दीनाक्रंदनम्

५. धर्मसूरिश्लोकांजलिः ६. महेन्द्रस्वर्गारोहः

७. भगवत्पंचाशिका

३.श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.

१. आत्मबोधरसायनम् २. समणधम्मरसायणं-सटीकम् (प्राकृत)

३. मयूरदूतम्--सटीकम् ४. लक्षणविलासः

५. संधिविनोदपंचदशी   ६. अण्णुत्तिसययं (प्राकृत)

७. अष्टस्मरणपादपूर्तिः   ८. आत्मबोधपंचविंशतिका

९. क्रियागुप्तिशतकम्

४. श्री नंदनसूरिजी म.   जैनस्तोत्रभानुः

५. श्री शीलचन्द्रसूरिजी म.

१. अलंकारनेमिः   २. गुरुगुणसंकीर्तनकाव्यम्

३. चतुर्विंशतिजिनस्तवना

६. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म.

१. परमप्रतिष्ठाकाव्यम्   २. प्रेममंदिरस्तोत्रम्

७. श्री भुवनचंद्रजी म.   पंचसूत्रकाव्यम्

८. श्री प्रतापविजयजी म.   नूतनस्तोत्रसंग्रहः

९. श्री यशोविजयजी म.(प्रवर्तक)   स्तुतिकल्पलता

१०. श्री मोक्षरतिविजयजी म.   हस्तगिरिप्रशस्तिः

११. श्री प्रशमरतिविजयजी म.

१. स्मृतिमंदिरप्रशस्तिः   २. हेमसंकीर्तनम्

१२. श्री राजसुंदरविजयजी म.

१. सौम्यवदनाकाव्यम्   २. जिनेन्द्रस्तोत्रम्

३. वच्छराजविहारप्रशस्तिः   ४. जिनराजस्तोत्रम्

५. अर्हत्स्तोत्रम्

१३. श्री हितवर्धनविजयजी म.   रामचंद्रः स मे गुरुः

१४. श्री प्रशमनिधिश्रीजी म.   श्रेयस्करजिनचतुर्विंशतिका

१५. नारायणाचार्य   कमललब्धिमहोदयकाव्यम्

दिगंबर परंपरा

१. श्री ज्ञानसागरजी म.

१. मुनिमनोरंजनशतकम् | २. भक्तिसंग्रहः

२. श्री विद्यासागरजी म.

१. श्रमणशतकम् | २. भावनाशतकम्
३. निरंजनशतकम् | ४. परीषहजयशतकम्
५. सुनीतिशतकम् | ६. मुक्तकशतकम्
७. तीर्थशतकम् | ८. निजानुभवशतकम्

३. मूलचंद्र शास्त्री

१. वचनदूतम् | २. अभिनवस्तोत्रम्

४. नेमिचंद्र जैन — कषायजयभावना

५. पन्नालाल साहित्याचार्य

१. रविव्रतोद्यापनम् | २. त्रैलोक्यतिलकव्रतोद्यापनम्
३. अशोकरोहिणीव्रतोद्यापनम् | ४. वृषभजिनेन्द्रपूजा

६. श्री सुपार्श्वमती माताजी — अजितसागरपूजा

७. गोविंदराय शास्त्री

१. कुरलकाव्यम् | २. बुंदेलखंडगौरवकाव्यम्

८. भुजबली शास्त्री — शांतिश्रृंगारविलासः

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म.

१. नवस्मरणानि | २. सूक्तिसंग्रहः

२. श्री मिश्रीमलजी म. — १. पद्यप्रबंधः

(कडकमिश्री) — २. मधुरशिक्षाखंडकाव्यम्

३. श्री मिश्रीमलजी म.

१. मधुकरकाव्यकल्लोलिनी   २. ज्योतिर्धरजय:

४. श्री रत्नचंद्रजी म.   भावनाशतकम्

५. श्री पुष्करमुनिजी   अमरसूरिकाव्यम्

६. मधुकर शास्त्री   महावीरसौरभम्

७. कृष्णदत्त शर्मा   आत्मारामीयकाव्यम्

तेरापंथी परंपरा

१. श्री महाप्रज्ञजी म.

१. अश्रुवीणा   २. भिक्षुशतकम्

२. श्री नथमलजी म.

१. वैराग्यतरंगिणी   २. जिनचतुर्विंशतिका

३. श्री चंदनमलजी म.

१. प्रबोधपंचपंचाशिका   २. प्रास्ताविकश्लोकशतकम्

३. अनुभवशतकम्   ४. आत्मभावद्वात्रिंशिका

५. वैराग्यैकसप्तति:   ६. पंचतीर्थी

४. श्री छत्रमलजी म.

१. कृष्णशतकम्   २. महावीरशतकम्

३. भिक्षुशतकम्   ४. जयाचार्यशतकम्

५. कालूशतकम्   ६. तुलसीशतकम्

७. तेरापंथशतकम्   ८. देवगुरुद्वात्रिंशिका

९. भिक्षुद्वात्रिंशिका   १०. तुलसीद्वात्रिंशिका

५. श्री चंपालालजी म.

१. अणुव्रतशतकम्   २. धर्मशतकम्

६. श्री मधुकरजी म.

१. समस्याशतकम् — २. तुलसीशतकम्

७. श्री गुलाबचंद्रजी म. शिक्षाशतपदी

८. श्री दुलीचंदजी म.

१. तुलसीशतकम् — २. एकाह्निकशतकम्

९. श्री नगराजजी म.

१. भिक्षुशतकम् — २. माथेरानशतकम्

३. स्तबकम्

१०. श्री राकेशकुमारजी म.

१. नैशंद्विशतकम् — २. श्लोकसहस्त्री

३. एकाह्निकंद्विशतकम् — ४. श्लोकसंग्रहः

११. श्री वत्सराज मुनि

१. चतुरायामः — २. एकाह्निकशतकम्

३. श्लोकसंग्रहः

१२. श्री मीठालाल मुनि

१. आषाढ़भूतिशतकम् — २. चित्रबंधकाव्यम्

१३. श्री धनराजजी म. एकाह्निकशतकम्

१४. श्री डुंगरमलजी म.

१. पांडवविजयः — २. अन्योक्तिसंदोहः

३. गुरुगौरवम्

१५. श्री बुद्धमलजी म. रोहिणेयः

१६. श्री धनराजजी म. (द्वितीय) भावभास्करकाव्यम्

१७. श्री महेन्द्रकुमारजी म.

१. एकाह्निकपंचशती — २. भारीमालशतकम्

३.चन्दनबालानाटकम्

१८. श्री सुखलालजी म.

१. एकाह्निकशतकम् २. उन्निद्रम्

१९. श्री मोहनलालजी म. (शार्दूल) कर्करकाव्यम्

२०. श्री मोहनलालजी म.

१. एकाह्निकशतकम् २. कल्पना

३. कर्बुरकाव्यम्

२१. श्री पुष्पराजजी म.

१. अर्धचन्द्रस्य चन्द्रिका २. ध्यानपुष्पम्

२२. श्री मोहनकुमारीजी म. श्लोकशतकम्

२३. श्री कनकश्रीजी म. पृथ्वीशतकम्

२४. श्री फुलकुमारीजी म. हरिश्चंद्रकालिकद्विशतकम्

२५. श्री संघमित्राजी म.

१. संस्कृतगीतमाला २. गीतिगुच्छः

२६. श्री कमलश्रीजी म. गीतिगुंफः

२७. श्री मंजुलाजी म. गीतिसंदोहः

२८. श्री मालूजी म. एकाह्निकशतकम्

२९. श्री जतनकुँवरजी म. एकाह्निकशतकम्

३० श्री मानकुँवरजी म. एकाह्निकशतकम्

३१. श्री सोहनलालजी म. एकाह्निकशतकम्

३२. रघुनंदन शर्मा

१. प्राकृतकाश्मीरम् २. साधुशतकम्

४. गद्य एवं चंपू रचना

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

संभवतः ग्रंथ रचना नहीं हुई है।

दिगंबर परंपरा

१. श्री ज्ञानसागरजी म.	दयोदयचंपूः
२. श्री मूलचंद्र शास्त्री	वर्धमानचंपूः
३. श्री बिहारीलाल शर्मा	मंगलायतनम्

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री रत्नचंद्रजी म.	रत्नगद्यमालिका
२. श्री दयाचंद्रजी म.	अमरभारती

तेरापंथी परंपरा

१. श्री तुलसीजी म.

१. निबंधनिकुरंबम्	२. सौराज्यम्
३. कविमाहात्म्यम्	४. धर्मरहस्यम्
५. किं तत्त्वम्	६. सर्वमस्ति
७. दिशा-संकेताः	८. प्रसंगोपात्तम्

२. श्री महाप्रज्ञजी म.

१. मुकुलम्	२. निबंधावलिः
३. संस्कृतभारतीयाः संस्कृतिश्च	४. जयपुरयात्रा

३. श्री चंदनमलजी म.

१. आर्जुनमालाकारम्	२. प्रभवप्रबोधः
३. धर्मदर्शकविवेकः	४. निबंधावलिः
५. ज्योतिःस्फुलिंगाः	

४. श्री बुद्धमलजी म.

१. निबंधसंदोहः
२. आत्ममीमांसाप्रवेशिका
३. स्मितम्
४. उत्तिष्ठ जाग्रत
५. भारतीय-संस्कृतिः

५. श्रीचंद्रजी म.

१. अवयवनिबंधः
२. एकाक्षरनिबंधः

६. श्री मोहनलालजी म.

१. प्रयासप्रशस्तिः
२. भारतीय संस्कृतिः

७. श्री मोहन कुमारजी म. निबंधमाला

५. स्तोत्र साहित्य

अर्वाचीन ग्रंथकारों की चारों परंपरा में स्तोत्ररचना विशाल संख्या में की गई है। स्तोत्र की और स्तोत्रकारों की सूचि बनाना अत्यंत कठिन है। स्वतंत्र पुस्तक के रूप में जो स्तोत्र संग्रह उपलब्ध थे उसका उल्लेख खंडकाव्य में किया गया है। हिन्दी-गुजराती-अंग्रेजी आदि पुस्तकों में एक या दो पन्ने के स्तोत्र मिलते हैं। ऐसे स्तोत्रों को रचना जरूर कह सकते हैं लेकिन ये रचनाएँ ग्रंथ नही है, अतः स्तोत्र साहित्य की संपूर्ण या अपूर्ण सूचि हमने बनाई नही है। यह सूचि एक स्वतंत्र निबंध का विषय बन सकती है।

(अर्वाचीन ग्रंथकारों नें २६ के आसपास महाकाव्य लिखे है, १३० के आसपास खंडकाव्यों की रचना की है, ३२ के आसपास गद्य काव्यों की रचना की है एवं संख्याबद्ध स्तोत्र काव्यों की रचना की है। हिन्दी-गुजराती-अंग्रेजी आदि भाषाओं में काव्य साहित्य लिखा गया है उसे तो सूचि में बांध भी नही सकते हैं।)

*

१२. अध्यात्म-योग-साहित्य

धर्म प्रवृत्ति मे एक हो जाना और विशेष आत्मशुद्धि करना यह अध्यात्म-योग है। अध्यात्म-योग संबंधी मार्गदर्शन आगमशास्त्रों में भी मिलता है।

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा में श्री हरिभद्रसूरिजी म., श्री हेमचंद्रसूरिजी म., श्री हर्षवर्धनोपाध्याय, श्री यशोविजयजी म. आदि ग्रंथकारों ने अध्यात्म-योग विषयक ग्रंथो की रचना की है।

दिगंबर परंपरा में श्री देवनंदि, श्री प्रभाचंद्र, श्री अजितदेव, श्री आशाधर, श्री शुभचंद्र आदि ग्रंथकारों ने अध्यात्म-योग विषयक ग्रंथों की रचना की है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने अध्यात्म-योग विषयक ग्रंथों की रचना की है।

१. प्राचीन ग्रंथ पर टीका

श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा

१. श्री नेमिसूरिजी म. अध्यात्मोपनिषद् विवरणम्

२. श्री भद्रंकरसूरिजी म.

१. अध्यात्मोपनिषत्-टीका २. अध्यात्मसार-टीका

३. श्री शुभंकरसूरिजी म. ज्ञानसार-टीका

४. श्री मित्रानंदसूरिजी म. अध्यात्मबिंदु टीका

५. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म.

१. सत्त्वोपनिषद् २. श्रामण्योपनिषद्

६. श्री यशोविजयजी म. अध्यात्मोपनिषत्-टीका

२. नूतन रचना

१. श्री बुद्धिसागरजी म.

१. अध्यात्मगीता २. आत्मस्वरुपम्

३. आत्मप्रदीपः ४. आत्मसमाधिशतकम्

५. आत्मदर्शनगीता ६. परमात्मदर्शनम्

७. शुद्धोपयोग: ८. चेतनशक्ति:

९. परब्रह्मनिराकरणम्

२. श्री न्यायविजयजी म.

१. अध्यात्मतत्त्वालोक: २. अज्झत्ततत्तालोओ (प्राकृत)

३. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म. अध्यात्मसारानुगम:

४. श्री प्रशमरतिविजयजी म. संवेगरति:

५. गिरिश शाह

१. योगतत्त्वविवेचनम् २. आत्मतत्त्वसमीक्षणम्

३. नमस्कारपदावलि: ४. आशाप्रेमस्तुति:

दिगंबर परंपरा

संभवत: ग्रंथ रचना नही हुई है।

स्थानकवासी परंपरा

संभवत: ग्रंथ रचना नही हुई है।

तेरापंथी परंपरा

१. श्री तुलसीजी म. मनोऽनुशासनम्

२. श्री महाप्रज्ञजी म. संबोधि:

(अर्वाचीन ग्रंथकारों ने कुल मिलाकर २७ के आसपास अध्यात्म ग्रंथ लिखे हैं। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी आदि भाषा में गद्य-पद्य नवरचना विशाल संख्या में हुई है।)

*

१३. उपदेश साहित्य

धर्म का आचरण करने के लिये प्रेरित करने वाले सरल-सरस ग्रंथों का उपदेश साहित्य में समावेश होता है।

श्वेतांबर परंपरा में श्री धर्मदासगणिजी म., श्री हरिभद्रसूरिजी म., श्री जिनदत्तसूरिजी म., श्री देवभद्रसूरिजी म., श्री मुनिसुंदरसूरिजी म. आदि ग्रंथकारों ने उपदेश विषयक ग्रंथों की रचना की है।

दिगंबर परंपरा में श्री गुणभद्र, श्री प्रभाचंद्र, श्री अमृतचंद्र आदि ग्रंथकारों ने उपदेश विषयक ग्रंथों की रचना की है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने उपदेश विषयक ग्रंथों की रचना की है।

श्वेतांबर परंपरा

१. श्री बुद्धिसागरजी म.

१. महावीरगीता
२. प्रेमगीता
३. कृष्णगीता
४. संघकर्तव्यम्
५. प्रजासमाजकर्तव्यम्
६. चेतकप्रबोध:
७. सुदर्शनाप्रबोध:
८. श्रेणिकसुबोध:
९. ज्ञानदीपिका
१०. शोकविनाशकग्रंथ:
११. दयाग्रंथ:
१२. जीवनप्रबोध:

२. श्री लावण्यसूरिजी म. देवगुर्वष्टकम्

३. श्री न्यायविजयजी म.

१. आत्महितोपदेश:
२. जीवनपाठोपनिषद्
३. जीवनहितम्
४. जीवनामृतम्
५. जीवनभूमि:
६. कल्याणमार्गमीमांसा
७. उपदेशसार:
८. कल्याणभावना

९. दीक्षाधिकारद्वात्रिंशिका　　१०. विद्यार्थीजीवनरश्मिः

११. आश्वासनम्

४. श्री लब्धिसूरिजी म.　　वैराग्यरसमंजरी

५. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.　　आराधनाशतकम्

६. श्री दर्शनसूरिजी म.

१. पर्युषणकल्पलता　　२. पर्युषणकल्पप्रभा

७. श्री रामचंद्रसूरिजी म.

१. जीवनसाफल्यदर्शनम् (अनुवाद) २. सुखं धर्मात् (अनुवाद)

३. शुभाभिलाषा (अनुवाद)

८. श्री जयंतसेनसूरिजी म.

१. महावीर उक्तवान्　　२. त्याग-निधयः

९. श्री नयवर्धनसूरिजी म.　　साध्वाचारसमुच्चयः

१०. श्री कल्याणबोधिसूरिजी म.

१. शमोपनिषद्　　२. देशनोपनिषद्

११. अमृत पटेल　　सूक्तिः कलापूर्णगुरोः शिवाय

दिगंबर परंपरा

१. श्री सुधर्मसागरजी म.　　षट्कर्मोपदेशमाला

२. श्री जवाहरलाल शास्त्री　　जिनोपदेशशतकम्

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री पुष्करमुनि

१. अहिंसाष्टकम्　　२. सत्यपंचकम्

३. जपपंचकम्　　४. ब्रह्मचर्यपंचकम्

५. महावीरषट्कम्　　६. गुरुदेवस्मृत्यष्टकम्

७. श्रावकधर्माष्टकम्　　८. मौनव्रतपंचकम्

९. भारतवर्षपंचकम्

तेरापंथी परंपरा

१. श्री चंदनमलजी म. — णीईधम्मसूत्तीओ (प्राकृत)

(अर्वाचीन ग्रंथकारों ने कुल मिलाकर ४८ के आस-पास उपदेशग्रंथ लिखे हैं। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी आदि भाषा में उपदेश साहित्य लिखा गया है वह तो बेहिसाब है।)

*

१४. कथा साहित्य

ऐतिहासिक और काल्पनिक कथा के द्वारा विशेष प्रेरणा कथाग्रंथ देते हैं।

श्वेतांबर परंपरा में श्री संघदासजी म., श्री हरिभद्रसूरिजी म., श्री उद्योतनसूरिजी म., श्री धनेश्वरसूरिजी म., श्रीसिद्धर्षि, श्री नेमिचंद्रसूरिजी म., श्री देवभद्रसूरिजी म. आदि ग्रंथकारों ने कथा साहित्य की रचना की है।

दिगंबर परंपरा में श्री हरिसेन, श्री पुष्पदंत आदि अनेक ग्रंथकारों ने कथा साहित्य की रचना की है।

अर्वाचीन ग्रंथकारों कथा साहित्य की रचना की है

श्वेतांबर परंपरा

१. श्री मुक्तिविमलजी म. पोषदशमीमाहात्म्यकथा

२. श्री अजितसागरसूरिजी म. भीमसेननृपचरित्रम्

३. श्री तिलकविजयजी म. मानतुंगमानवतीचरितम्

४. श्री जिनजयसागरसूरिजी म. जिनकृपाचंद्रसूरीश्वरचरितम्

५. श्री लब्धिसूरिजी म.

१.मेरुत्रयोदशी कथा २. शुकराज-कथा

६. श्री कस्तूरसूरिजी म.

१. उसहणाहचरियं (प्राकृत) २. सिरिचंदरायचरियं (प्राकृत)

३. पाईअविन्नाणकहा (प्राकृत)

७. श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म.

१. रूपसेनचरित्रम् २. रणसिंहचरित्रम्

३. श्रीपालचरित्रम् ४. वीरबलविनोदद्वात्रिंशिका

८. श्री भुवनचंद्रजी म. सामसविहंगमः (अनुवाद)

९. श्री राजरत्नसूरिजी म. कथाकल्पवल्ली

१०. श्री कल्याणकीर्तिविजयजी म. हेमचंद्राचार्यः

११. श्री कीर्तित्रयी	हास्यमेव विजयते
१२. श्री हेमचंद्रसूरिजी म.	समतासागरचरितम्
१३. श्री प्रशमनिधिश्रीजी म.	
१. महोदयचरितम् (अनुवाद)	२. हेमभूषणचरितम् (अनुवाद)

दिगंबर परंपरा

१. श्री कुंथुसागरजी म.	शांतिसागरचरित्रम्
२. भुजबली शास्त्री	भुजबलीचरितम्

स्थानकवासी परंपरा

१. श्री घासीलालजी म.	लक्ष्मीधरचरित्रम्

तेरापंथी परंपरा

१. श्री तुलसी जी म.	कथाकोष:
२. श्री महाप्रज्ञजी म.	
१. कथाव्यूह:	२. रत्नपालचरितम्
३. श्री पुष्पराजजी म.	कथानिकुंज
४. श्री बुद्धमलजी म.	१. कथापेटकम् २. अत्तकहा (प्राकृत)
५. श्री चंदनमलजी म.	
१. रयणवालकहा (प्राकृत)	२. जयचरिअं (प्राकृत)
६. श्री विमलकुमारजी म.	
१. ललियंगचरिअं (प्राकृत)	२.वंकचूलचरिअं (प्राकृत)
३. देवदत्ताचरियं (प्राकृत)	४. सुबाहुचरिअं (प्राकृत)
५. मियापुत्तं (प्राकृत)	६. पएसिचरियं (प्राकृत)
७. श्री कन्हैयालालजी म.	वंकचूलचरितम्
८. श्री मीठालालजी म.	कथासंग्रह:

अर्वाचीन ग्रंथकारों ने ३९ के आस-पास कथाग्रंथ लिखे हैं। हिंदी-गुजराती-अंग्रेजी भाषा में अगणित कथाग्रंथ हैं।

*

१६. उपसंहार

अर्वाचीन ग्रंथकारों के समक्ष कुछ और भी साहित्य प्रणाली है जो प्राचीन ग्रंथकारों के समक्ष नहीं थी-

१. महानिबंध

२. प्रस्तावना

३. मुखपत्र

४. प्रासंगिक

१. निबंध

किसी एक विषय के अनेक आयाम का गहन अभ्यास करने के बाद निबंध लिखा जाता है। अर्वाचीन ग्रंथकारों ने कुछ निबंध भी लिखे हैं। निबंध को प्रमाण-पत्र मिलने के बाद महानिबंध कहा जाता है।

१. दरबारीलाल कोठिया

१. जैनप्रमाणमीमांसाया:स्वरूपम् २. आत्मा अस्ति न वा

३. जैनदर्शने करुणाया:स्वरूपम्

२. दयाचंद्र साहित्याचार्य विश्वतत्त्वप्रकाशक: स्याद्वाद:

३. नेमिचंद्र ज्योतिषाचार्य संस्कृतगीतिकाव्यानुचिंतनम्

४. श्री जिनमणिसागरसूरि साध्वीव्याख्याननिर्णय:

५. बुद्धिमनिगणि

१. कल्याणकपरामर्श: २. पर्युषणपरामर्श:

उपरोक्त निबंधों के अतिरिक्त और भी निबंध होंगे परन्तु हमारी जानकारी में उपर्युक्त नाम ही हैं।

२. प्रस्तावना

प्राचीन ग्रंथकारों ने हस्तलेखन किया। हस्तप्रत में प्रथम पत्र से ही ग्रंथ का प्रारंभ हो जाता था, परंतु आज मुद्रण युग है। मुद्रित पुस्तक में प्रस्तावना, अनुक्रमणिका,

परिशिष्ट का विशेष महत्त्व होता है। प्रस्तावना में ग्रंथ और ग्रंथकार का ऐतिहासिक परिचय दिया जाता है। संभवतः श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा के आचार्य श्री आनन्दसागरसूरिजी ने संस्कृत प्रस्तावना लेखन को महत्त्व दिया। आज अनेकानेक ग्रंथों के प्रारंभ में समृद्ध और विषयसम्बद्ध संस्कृत प्रस्तावनाएँ हम पढ़ सकते हैं। अर्वाचीन ग्रंथकारों ने प्रस्तावना लेखन का पर्याप्त विकास किया है। अर्वाचीन गद्यकला का अभ्यास करने के लिए प्रत्येक प्रस्तावनाओं का परिशीलन आवश्यक है।

३. मुखपत्र

मुद्रणयुग ने वर्तमानपत्र और मुखपत्र की नवीन विभावना दी। विविध विश्वविद्यालय और संस्थानों के द्वारा- **विश्वसंस्कृतम्**, **संभाषण संदेश**, **सागरिका** जैसे संपूर्ण आधुनिक शैली के मुखपत्र प्रकाशित होते हैं। अर्वाचीन जैन ग्रंथकारों में कीर्तित्रयी एक ऐसा नाम (उपनाम) है जिसके द्वारा '**नंदनवनकल्पतरु**' नामक मुखपत्र संपादित होता है। इस मुखपत्र में काव्य, नाट्य, निबंध आदि के अनेक लेखकों के नाम मिलते हैं। कृतियों का उच्च स्तर 'नंदनवनकल्पतरु' की विशेषता है। अन्य मुखपत्रों में **अर्हम सुंदरम्** आदि के नाम हैं। अर्वाचीन संस्कृत रचनाओं एवं लेखों का विशाल संपुट, ये मुखपत्र हमें देते हैं।

४. प्रासंगिक

स्मृतिग्रंथ भी मुद्रण युग की ही विभावना है। भगवान्, मंदिर, गुरु या व्यक्ति विशेष के लिए अनेक लेखों का संचय होता है स्मृति ग्रंथ में। लेखों के संग्रह में कुछ-कुछ लेख संस्कृत-प्राकृत में लिखे जाते हैं जो गद्य या पद्य में होते हैं। स्तुति, स्तवना, अभिनंदन आदि विषयक रचनाओं का विशिष्ट संकलन स्मृति ग्रंथों में होता है।

उपर्युक्त चारों विधाओं की अनेकानेक रचनाएँ अर्वाचीन लेखकों ने की है। प्रत्येक विधा की रचनाओं का स्वतंत्र अभ्यास होना चाहिए।

हमने जो यह सूची बनायी है उसे हम पूर्ण नहीं मानते हैं। हमारी दो मर्यादा है- एक, हम प्रत्येक ग्रंथों को देख नहीं पाए हैं। अतः ग्रंथ के विषय का पूर्ण अभ्यास हम कर नहीं पाए। दो, हम प्रत्येक ग्रंथकारों से व्यक्तिगत संपर्क नहीं कर सके हैं, अतः कुछ नाम न हो यह भी हो सकता है, और कुछ नाम में अंतर हो यह भी हो सकता है। हमारी पाठकों से विनंती है कि ग्रंथ और ग्रंथकार के विषय में कोई अव्यवस्था दिखे तो हमें क्षमा करें और सूचना दें। हम सुधारने की कोशिश करेंगे।

इस निबंध से आधुनिक जैन संस्कृत, प्राकृत ग्रंथकारों का नाम परिचय जरूर मिलेगा। इस निबंध से जो निष्कर्ष निकलता है वह इस प्रकार है-

ग्रंथ प्रकार	संख्या
१. आगम विषयक ग्रंथ	४३
२. प्राचीन प्रकरणकी टीकाएँ	४७
३.नूतन प्रकरण रचनाएँ	११२
४. कर्म विषयक रचनाएँ	२६
५. व्याकरण ग्रंथ	३४
६. कोश	३१
७. दार्शनिक ग्रंथ	७०
८. अलंकार ग्रंथ	४
९. छंद:ग्रंथ	३
१०. प्राचीनकाव्य टीका	२१
११. महाकाव्य	२६
१२. खंडकाव्य	१३०
१३. गद्यकाव्य	३२
१४. अध्यात्मग्रंथ	२७
१५. उपदेशग्रंथ	४८
१६. कथाग्रंथ	३९
१७. निबंध	८
कुलग्रंथ	७०१

*

आधुनिक संस्कृत जैन ग्रंथकार नाम सूची

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
१. अजितसागरसूरि	श्वेतांबरमूर्तिपूजक	१
२. अभयशेखरसूरि	”	६
३. अमृत पटेल	”	१
४. अमृत सलोत	”	१
५. अमृतसूरि	”	४
६. अशोकश्री	तेरापंथी	१
७. आनंदसागरसूरि	श्वेतांबरमूर्तिपूजक	६७
८. उदयचंद जैन	दिगंबर	२
९. उदयसूरि	”	४
१०. उदयवल्लभविजय	”	१
११. कनकश्री	तेरापंथी	१
१२. कन्हैयालालजी	”	१
१३. कमलश्री	”	१
१४. कल्याणकीर्तिविजय	श्वेतांबरमूर्तिपूजक	१
१५. कल्याणबोधिसूरि	श्वेतांबरमूर्तिपूजक	३१
१६. कस्तूरसूरि	”	३
१७. कानमलजी	तेरापंथी	१
१८. कीर्तित्रयी	श्वेतांबरमूर्तिपूजक	१
१९. कीर्तियशसूरि	”	१
२०. कुलचंद्रसूरि	”	५

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
२१. कुसुमप्रज्ञाजी	तेरापंथी	१
२२. कुंथुसागरजी	दिगंबर	१७
२३. कृष्णदत्त शर्मा	स्थानकवासी	१
२४. गिरीश शाह	श्वेतांबरमूर्तिपूजक	४
२५. गुणरत्नसूरि	”	४
२६. गुणहंसविजयजी म.	”	३
२७. गुलाबचंद्रजी	तेरापंथी	१
२८. गोविंदराय	दिगंबर	२
२९. घासीलालजी	स्थानकवासी	५६
३०. चिन्नास्वामी	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
३१. चंदनमलजी	तेरापंथी	१६
३२. चंद्रगुप्तसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
३३. चंद्रसागरसूरि	”	१
३४. चंपालालजी	तेरापंथी	२
३५. चैनसुखदास	दिगंबर	१
३६. चौथमलजी	तेरापंथी	४
३७. छत्रमलजी	तेरापंथी	१०
३८. जगच्चंद्रसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	४
३९. जतनकुंवरजी	तेरापंथी	१
४०. जयघोषसूरि	”	१
४१. जयशेखरसूरि	”	१
४२. जयंतसेनसूरि	”	२
४३. जवाहरलाल शास्त्री	दिगंबर	१

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
४४. जितेन्द्रसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
४५. जिनजयसागर	”	१
४६. जिनमणिसागर	”	१
४७. जिनेन्द्र वर्णी	दिगंबर	१
४८. जिनेन्द्रसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
४९. ज्ञानसागर	दिगंबर	१०
५०. डुंगरमल	तेरापंथी	३
५१. तिलकविजय	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
५२. तुलसी	तेरापंथी	१६
५३. दयाचंद्र	स्थानकवासी	१
५४. दरबारीलाल पंडित	दिगंबर	१
५५. दरबारीलाल कोठिया	”	३
५६. दर्शनसूरि	”	६
५७. दर्शनरत्नसूरि	”	१
५८. दुलीचंदजी	तेरापंथी	२
५९. देवेन्द्रमुनि	स्थानकवासी	१
६०. धनराजमुनि (प्रथम)	तेरापंथी	२
६१. धनराजमुनि (द्वितीय)	”	१
६२. धर्मसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
६३. धर्मधुरंधरसूरि	”	३७
६४. नगराज मुनि	तेरापंथी	३
६५. नत्थमलजी	”	५

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
६६. नयवर्धनसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
६७. नंदनसूरि	"	१०
६८. नारायणाचार्य	"	१
६९. नित्यानंद शास्त्री	"	२
७०. नेमिचंद्र जैन	दिगंबर	१
७१. नेमिचंद्र ज्योतिषाचार्य		१
७२. नेमिसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१४
७३. न्यायविजय	"	२४
७४. पन्नालाल साहित्याचार्य	दिगंबर	९
७५. पुष्करमुनि	स्थानकवासी	१०
७६. पुष्पराजजी	तेरापंथी	२
७७. पूर्णचंद्रविजय	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
७८. प्रणम्यसागर	दिगंबर	६
७९. प्रतापविजय	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
८०. प्रशमरतिविजय	"	४
८१. प्रशमनिधिश्री	"	३
८२. प्रेमसूरि	"	३
८३. फुलकुमारीजी	तेरापंथी	१
८४. बालचंद्र शास्त्री	दिगंबर	१
८५. बिहारीलाल शर्मा	"	१
८६. बुद्धमल	तेरापंथी	८
८७. बुद्धिमनि गणि		२

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
८८. बुद्धिसागरसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	२४
८९. बी. एल.जैन	दिगंबर	१
९०. भद्रंकरसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	४
९१. भुजबली शास्त्री	दिगंबर	२
९२. भुवनचंद्रजी	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	२
९३. मधुकरजी	तेरापंथी	२
९४. मधुकर शास्त्री	स्थानकवासी	१
९५. महाप्रज्ञजी	तेरापंथी	११
९६. महायशाश्री	"	१
९७. महेन्द्र कुमारजी	तेरापंथी	३
९८. मालूजी	"	१
९९. मानकुंवरजी	"	१
१००. मंजुलाजी	"	१
१०१. मित्रानंदसूरिजी	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
१०२. मिश्रीमलजी (प्रथम)	स्थानकवासी	४
१०३. मिश्रीमलजी (द्वितीय)	"	२
१०४. मीठालाल मुनि	तेरापंथी	२
१०५. मुक्तिविजयजी	"	१
१०६. मुक्तिविमलजी	"	२
१०७. मुनिचंद्रसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	२
१०८. मूलचंद्र शास्त्री	दिगंबर	७
१०९. मोक्षरतिविजय	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	२

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
११०. मोहन कुमारजी	तेरापंथी	१
१११. मोहनलाल बांठिया	"	३
११२. मोहनलालजी	"	५
११३. मोहनलालजी शार्दूल	"	१
११४. यशोविजय (प्रथम)	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
११५. यशोविजय (द्वितीय)	"	७
११६. युगचंद्रसूरि	"	१
११७. रघुनंदन शर्मा	तेरापंथी	५
११८. रत्नचंद्रजी	स्थानकवासी	६
११९. रत्नबोधिविजयजी	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	३
१२०. रम्यरेणु	"	२
१२१. राकेश कुमारजी	तेरापंथी	४
१२२. राजधर्मविजयजी	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
१२३. राजनारायण शर्मा	"	१
१२४. राजरत्नसूरि	"	१
१२५. राजशेखरसूरि	"	१
१२६. राजसुंदरविजय	"	५
१२७. राजेन्द्रसूरि	"	२
१२८. रामचंद्रसूरि	"	३
१२९. लब्धिसूरि	"	१०
१३०. लावण्यसूरि	"	१७
१३१. वत्सराजमुनि	तेरापंथी	३
१३२. विद्यासागरजी	दिगंबर	८

नाम	परंपरा	ग्रंथ संख्या
१३३. विमल कुमारजी	तेरापंथी	६
१३४. विचक्षणसूरि	"	१
१३५. विनयरक्षितविजयजी	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
१३६. वीरशेखरसूरि	"	६
१३७. वेलणकर	दिगंबर	१
१३८. शिवानंद विजय	"	६
१३९. शीलचंद्रसूरि	"	४
१४०. शुभंकरसूरि	"	५
१४१. श्रीचंद्रजी	तेरापंथी	३
१४२. संघमित्राजी	"	२
१४३. सिद्धप्रज्ञाजी	"	१
१४४. सुखलालजी	"	२
१४५. सुधर्मसागर	दिगंबर	७
१४६. सुपार्श्वमती	"	१
१४७. सुशीलसूरि	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
१४८. सौम्यज्योतिश्री	"	१
१४९. सोहनलालजी	तेरापंथी	२
१५०. हरगोविंददास शेठ	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	१
१५१. हस्तिमलजी	स्थानकवासी	१
१५२. हितवर्धनविजय	श्वेतांबर मूर्तिपूजक	४
१५३. हीरालाल हंसराज	"	१
१५४. हेमचंद्रसूरि (प्रथम)	"	१
१५५. हेमचंद्रसूरि (द्वितीय)	"	१

*

१७. आधार ग्रंथ

१. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास

लेखक- जगन्नाथ पाठक

प्रकाशक- उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

२. संस्कृत काव्य विकास में बीसवीं शताब्दी के जैन मनीषियों का योगदान

लेखक- नरेन्द्र सिंह राजपूत, सांगानेर।

३. स्थानकवासी जैन परम्परा का इतिहास

लेखक- डॉ. सागरमल जैन एवं डॉ. विजय कुमार

प्रकाशक- पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।

४. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास

प्रकाशक- पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।

५. जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,

लेखक- मोहनलाल दलीचंद देसाई

प्रकाशक- ओमकारसूरि ज्ञानमंदिर, सूरत

६. जैन ग्रंथ और ग्रंथकार

लेखक- फतेहचंद बेलानी

प्रकाशक- जैन संस्कृति संशोधन मंडल, बनारस।

७. संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र

लेखक- अभिराज राजेन्द्र मिश्र

प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

८. जैन साहित्य सूचीपत्र

संपादक- रत्नत्रयविजयजी म.

प्रकाशक- रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय

मालवाड़ा, जि. जालोर राजस्थान

९. तेरापंथ का संस्कृत और प्राकृत साहित्य : उद्भव और विकास

लेखक- गुलाबचन्द्रजी 'निर्मोही'

प्रकाशक- जैन विश्वभारती, लाडनूं

*

ग्रन्थ परिचय

संस्कृत भाषा में नवरचना करना एक विरल प्रवृत्ति होती है। जैनधर्म की चार प्रमुख परम्परा में कुल मिलाकर ७०० के आसपास संस्कृत ग्रंथों की रचना हुई है। इन ग्रंथों के विषय में जानकारी पाने के लिये यह किताब उपयोगी है।

देवर्धि जैन

अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थाः

शिशुपालवधम् (काव्य)। माघ कृत। वल्लभ देव कृत 'संदेह विषौषधि' तथा मल्लिनाथ कृत 'सर्वकषा' टीका द्वय (का. 69)

काव्यमीमांसा (काव्य)। राजशेखर कृत। नारायण शास्त्री खिस्ते कृत 'काव्यमीमांसा चन्द्रिका' टीका-हिन्दी टीका-आचार्य शेषराज शर्मा (का. 86)

काशिका (व्याकरण)। वामन और जयादित्य कृत पाणिनीय व्याकरण की टीका। नारायण मिश्र कृत हिन्दी टीका एवं भूमिका, नोट्स। सम्पूर्ण (1-2 भाग) (का. 37)

हरविजयम् (काव्य)। राजानक रत्नाकर विरचित। राजानक अलक कृत टीका सहित। पं. दुर्गाप्रसाद एवं काशीनाथ पाण्डुरङ्ग परव सम्पादित (का. 223)

परिभाषेन्दुशेखरः (व्याकरण)। नागेशभट्ट कृत। बेनीमाधव शास्त्री कृत 'शास्त्रर्थकला' टीका। राजनारायण शास्त्री कृत नोट्स आदि (का. 137)

नलचम्पूः अथवा दमयन्ती कथा (चम्पू)। त्रिविक्रम भट्ट कृत। चण्डपाल कृत 'विषमपद' टीका-कैलाशपति त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका (का. 98)

मृच्छकटिकम्। महाकविशूद्रक कृत। (नाटक) गङ्गा-संस्कृत हिन्दी व्याख्या युक्त डॉ. गङ्गासागर राय। (चौ.सं.भ. 14)

हिन्दी दशरूपक (नाट्य)। धनञ्जयकृत। धनिककृत दशरूपावलोक संस्कृत टीका तथा प्रदीप हिन्दी व्याख्या डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर। (चौ.सं.भ. 27)

चौखम्भा प्रकाशन

CHAUKHAMBHA PRAKASHAN

पोस्ट बाक्स नं. 1150

के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (समीप मैदागिन)

वाराणसी - 221001 (भारत)

टेलीफोन : 0542-2335929, 6452172

E-mail : c_prakashan@yahoo.co.in

Chaukhambha Prakashan
Registration No. A-77539